सहज समाचार

अजमेर, राजस्थान में सहज कृषि गोष्ठी

द्वारा - अजमेर सामूहिकता - श्री जी.डी.पारीक (सदस्य सचिव, राष्ट्रिय सहज कृषि कार्यक्रम)
कार्यक्रम - सहजयोग कृषि प्रदर्शनी
स्थान - अजमेर

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी जी की असीम अनुकम्पा से चार दिनों (04 & 07 फरवरी 2014) की एक राष्ट्रिय गोष्ठी का 'राष्ट्रीय बीजी मसाला अनुसंधान केंद्र' (NRCSS अजमेर, राजस्थान) में आयोजन हुआ था। यहाँ पर 12 राज्यों (गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि) से लगभग 5000 किसानों एवं कृषि विशेषज्ञों ने भाग लिया और सहजयोग का लाभ उठाया, जिसमें शामिल था कृषि में, बाग़बानी में, पशुपालन में, वानिकी में, एवं और भी संबंधित कार्यों में चैतन्य का प्रभाव।

सहजयोग कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ गुरबचन सिंह द्वारा किया गया, जो कि कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड (ए.एस.आर.बी., नई दिल्ली) के अध्यक्ष हैं। उनके साथ थे डॉ बलराज सिंह, (निर्देशक - NRCSS) डॉ ऍस.एम.के. नक्वी (निर्देशक - भेड़ एवं ऊन शोध संस्थान), श्री राम चरण चौधरी (अध्यक्ष, डेरी) एवं विभिन्न प्रदेशों के कृषि वैज्ञानिक भी जिन्होंने प्रदर्शनी में भाग लिया एवं सहजयोग पद्धति से लाभ उठाया। इस दौरान, उनसे प्रार्थना भी की गई, कि वो किसानों के लाभ हेतु प्रयोगात्मक शोध भी करें जिसमें कम लागत वाले, आसान तरीके सम्मिलित हों।

समापन सत्र के दौरान, डॉ लोकेश शेखावत (उप-कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय) ने सहजयोग कृषि की विशिष्ट प्रदर्शनी हेतु पुरस्कृत भी किया।

यह सब संभव हुआ अजमेर सामूहिकता के अथक प्रयासों द्वारा जिसमें शामिल हैं - श्री देवेन्द्र शर्मा (जिला समन्वयक), श्री वी.ऍस. राठौर, डॉ बी.एल. चौधरी, डॉ ऍस. अवस्थी, एवं श्री जी.डी. पारीक (सदस्य सचिव, राष्ट्रिय सहज कृषि कार्यक्रम)।
इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए श्री पारीक को इस पते पर ईमेल कर सकते हैं –gdpareek@yahoo.com

सहज योग कृषि को मिला श्रेष्ठ पुरस्कार

द्वारा - श्री प्रजीश परकंडी (सदस्य - राष्ट्रीय युवाशक्ति संचालक समिति)
कार्यक्रम - सहजयोग सेमिनार में कृषि चर्चा एवं उसका प्रयोगात्मक शुभारम्भ
स्थान - जिला कोझिकोड, केरला

19 जनवरी 2014 को केरला प्रदेश में लगभग 130 सहजयोगी एवं विभिन्न समितियों के सदस्यों ने प्रादेशिक गोष्ठी में भाग लिया जिसका आयोजन दिनांक 19 जनवरी 2014 को पश्चिम चुन्गम क्षेत्र, कोझिकोड में हुआ था। वहाँ पर सहजयोग कृषि पर एक प्रस्तुति पेश की गयी। इस प्रस्तुति से प्रेरित लगभग 60 सदस्यों ने अपने घर के आसपास कृषि करने का निर्णय लिया और लगभग 20 सदस्यों ने तो शुरू भी कर दिया। केरल के युवा शक्ति समूह की तरफ से हमने एक बड़े खेत, जिसमें किसान सब्जी उगाते हैं, से संलग्न 10 शतांश भूमि पर सब्जी उगानी शरू करी।

इस टीम में किसी को भी सब्जी उगाने का अनुभव नहीं था। कार्यक्रम शुरू करने के दो दिन पहले, युवाशक्ति ने खेत तो तैयार किया एवं उसके बाद जल, विभिन्न सब्जियों के बीज (भिन्डी) बैंगन, करेला, पालक, सफ़ेद करेला, पीला खीरा, चिचिंडा, तुरई) को श्री माताजी के चरणों में चैतान्यित होने के लिए प्रातः काल रख गया। दिनांक 01 फरवरी 2014 को कार्यक्रम इस प्रकार शुरू किया गया - सामूहिक शूबीट, सामूहिक ध्यान (माँ के प्रवचन के साथ), 4 बार श्री गणेश अथर्वशीष, एवं श्री शाखम्भरी देवी का मंत्र।

सामूहिकता के नेतृत्व श्री गोपालन (प्रदेश समन्वयक) ने किया तथा श्री शशिधरन (कोझिकोड जिला समन्वयक), श्री मनोज आदि भी सामूहिकता में उपस्थित थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम के दौरान सहजयोगियों ने तीव्र परम चैतन्य महसूस किया। बीजों को 24 घंटे तक चैतान्यित होने के बाद युवाशक्ति ने उन्हें भूमि में उचित प्रकार से बो दिया एवं उस पर चैतान्यित जल भी डाला। यह तय हुआ है कि 6 युवाशक्ति सदस्य इस कृषि की उचित प्रकार से देखभाल करेंगे। केरल में लगभग 60 युवाशक्ति सदस्य इस कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं।

केरल में सहजयोग पद्धति द्वारा कृषि का यह पहला मौका है एवं सबसे प्रार्थना है कि श्री माताजी से प्रार्थना कर इसको सफल बनाएँ जिस से कि यह केरल प्रदेश में सहजयोग के प्रसार में मददगार हो सके।

झारखंड में ग्रामीण स्तर पर सहज कृषि पर विशाल अभियान

द्वारा - श्री जी. डी. पारीक (सदस्य सचिव, राष्ट्रीय सहज कृषि कार्यक्रम)
कार्यक्रम - झारखंड राज्य में ग्रामीण स्तर पर सहज कृषि पर विशाल अभियान एवं किसानों से परिचर्चा
स्थान - झारखंड राज्य

परम पूज्य श्री माताजी कि विशेष कृपा से एवं श्री दिनेश राय, श्री विजय कपूर, श्री श्रीचन्द चौधरी, श्री सुमीत अग्रवाल की प्रेरणा से, एक सहजयोग टीम, जिसमें श्री जी. डी. पारीक, श्री एच.पी. बियानी, श्रीमती पी. अंजना, बहन सुमित्रा जी, श्री जी.के. झा, बहन सुभजा जी, श्री सुनील झा, श्री विजय कुमार शाह थे, एवं रांची सामूहिकता के सहयोग से, ग्रामीण स्तर पर 15 दिन का (22 फरवरी - 6 मार्च) एक गहन अभियान चलाया गया जिसका उद्देश्य था झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में सहजयोग एवं सहज कृषि के बारे में प्रचार-प्रसार।

इस विशाल अभियान के दौरान 15 गांवों को सम्मिलित किया गया - सोमलिया, खटगा, अध्चुरु, पाटनटोली, तोचर, मुरुमागढ़, कटुलाना, मखमदुरा, लालगंज, गोदिया, होचर, बधरवा, निचिंतपुर, साहिबगंज आदि, जहाँ लगभग 3000 किसान / आम जनता को आत्मसाक्षात्कार दिया गया एवं सहजयोग एवं सहज पद्धति से कृषि के लाभ बारे में जानकारी दी गयी।

सहजयोग, चैतन्य एवं कृषि तथा बाग़बानी और संबंधित गतिविधियों पर सहजयोग के महत्व पर जानकारी दी गई।

28 फरवरी से 2 मार्च तक खेलगांव (रांची) में सहज कृषि प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी, जिसमें महत्व के विषय थे कृषि और बागबानी, सब्जियों और दूसरे पशुधन पर चैतन्य का प्रभाव। यहाँ पर लगभग 2000 से अधिक जनता ने भाग लिया जिसमें सहजयोगी भी थे। इन लोगों को तकनीकी जानकारी एवं चैतान्यित बीज भी उपलब्ध करवाए गए जिस से कि सहज कृषि की जानकारी अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचे।

सहजयोग कृषि समन्वयक समिति ने डॉ माता प्रसाद पांडे (उप कुलपति - बिरसा कृषि विश्वविद्यालय - रांची) से भी संपर्क किया और उनको सहजयोग एवं सहज कृषि के बारे में जानकारी दी गई। डॉ पांडे इस सूक्ष्म विज्ञान के कायल हो गए और उन्होंने यह आश्वासन दिया, कि वो एक एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करेंगे जिसमें सभी विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक, गैर-सरकारी संगठन, प्रादेशिक कृषि विभाग के अधिकारी आदि को आमंत्रित करेंगे जिस से कि इस बात का झारखंड प्रदेश में बेहतर तकनीकी प्रसार हो सके और यह प्रभावशाली रूप से कार्यान्वित हो सके।

इसी अभियान के दौरान, हमने श्री जे.के. जोसफ (ओ.आई.सी. - सेना फार्म, नामकुम) से संपर्क किया, वहाँ के सभी कर्मचारी एवं खेतीबाड़ी मजदूरों (75) के लिए सहजयोग आत्मसाक्षात्कार कार्यक्रम आयोजित किया, और उनको पशुओं के चारे एवं कृषि, तथा पशुधन पर चैतन्य के प्रभाव के बारे में बताया (वहाँ पर 600 गायें है, जिनसे रोजाना 3200 लीटर दूध आता है)।

कृषि ज्ञान विकास केंद्र, जो कि वहाँ पर एक प्रसिद्ध गैर-सरकारी संस्था है, उसके सचिव श्री डॉ अरविन्द सहाय से संपर्क किया गया, उनको सहजयोग एवं सहज कृषि पर एक प्रस्तुति दिखाई गयी, जिसमें सभी कर्मचारियों ने एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। उन्होंने हमें हर संभव सहयोग का आश्वासन भी दिया।

और अंत में परन्तु महत्वपूर्ण, डॉ श्री नितिन चौधरी (भारतीय प्राशासनिक सेवा - कृषि) को भी सहजयोग एवं सहज कृषि के बारे में, जीवित वस्तुओं पर (जैसे मानव) पर चैतन्य के असर के बारे में जानकारी दी गयी और उन्होंने एक-दिवसीय कार्यशाला आयोजित करने की सलाह दी, जिएमें सभी कर्मचारी भाग लें और इसके बेहतर कार्यान्वयन पर चर्चा की जाए। डॉ जटाशंकर चौधरी (निर्देशक कृषि - ATMA) को भी सहज के बारे में जानकारी दी गयी तथा सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारियों के लिए आत्मसाक्षात्कार कार्यक्रम आयोजित किया गया और दस राज्यों में सहज कृषि के अंतर्गत हो

रहे कार्य को दर्शाया गया।

10 राज्यों में NSAP (National Sahaja Agriculture Project) के अंतर्गत सहज कृषि कार्यों के संपन्न होने का बाद, श्री अग्रवाल ने बागडोर संभाली और अपने राज्य में सहज कृषि के कार्य शुरू किये।

आदिशक्ति के इस सपने को पूर्ण करते हुए, वर्ष 2014 (जागृति वर्ष) में गाँव-गाँव में सहजयोग एवं सहज कृषि का प्रचार करते हुए, मेरा सभी राज्यों के प्रादेशिक समन्वयकों से, जैसे कि बिहार, छतीसगढ़, केरला, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु, अरुणाचलप्रदेश, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, गोवा, पंजाब, हिमाचल एवं हरयाणा, से अनुरोध है कि इस बारे में, और कृषि समृद्धि के लिए अविलंब कार्य शुरू करें।

ंबनधित प्रश्न किए जिनका उत्तर एक ट्रस्ट समिति एवं डॉ ईरा जोशी ने देया। सेमिनार की एक खास विशेषता थी कृषि एवं सहजयोग पर एक प्रस्तुति हुई जिसमें कृषि पर किए जा रहे सहज कार्यों का ब्यौरा दिया गया । यह प्रस्तुति श्री डॉ डी. पारीक द्वारा की गई।

सांयकालीन सत्र मुख्तयः आनंद एवं उल्लास हेतु रहते थे जिनके पश्चात् छोटे बच्चों द्वारा भजन एवं नृत्य प्रस्तुत किए जाते थे । सभी योगी जनों ने नृत्य किया एवं दिव्य आनंद का मजा लिया ।

सेमिनार की समापन दिनांक ०८ जून को दूसरे पहर में हुआ जब आदिशक्ति के श्री चरणों में पुष्प अपर्ण किए गए । मुख्य पंडाल में शाम ६ बजे एक छोटा सा जन साक्षातकार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया । जिस समय सभी योगी जन प्रस्थान की तैयारी में भी लगे थे । सेमिनार स्थान के चारों ओर रहने वाले ग्रामवासियों को आमंत्रित किया गया और उनमें से कई लोग तो कुछ दिन पूर्व सेमिनार स्थल पर सफाई का कार्य भी कर रहे थे ।

लगभग ३०० लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ ।

सप्रेम द्वारा उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश सामूहिकता ।

५. ओडिशा में १७०० से ज्यादा आदिवासी किसानों को कृषि लाभ

द्वारा : श्री जी.डी. पारीक (सदस्य सचिव, राष्ट्रीय सहज कृषि कार्यक्रम)

श्री माताजी की असीम अनुकंपा से डॉ बी.के.मोहती जो की ओडिशा कृषि विश्वविद्यालय में प्रोफैसर हैं, तथा उनकी पत्नी श्रीमती राशी मोहती द्वारा प्रदेश कृषि पर अद्वितय कार्य किए गए हैं । ये कार्य विशेषतः भुवनेश्वर से ५०० कि.मी. के ग्रामीण इलाकों में हुए हैं । लगभग १७०० से ज्यादा ग्रामीण आदिवासी किसानों को सहज आत्मसाक्षातकार एवं सहज कृषिपद्धति द्वारा लाभ हुआ । इसके अलावा इन इलाकों में बहुत से सहजयोग ध्यान केंद्र भी स्थापित हुए हैं । इन इलाकों में धान एवं बैंगन की फसल में वर्ष २०१२-२०१३ में परिणाम इस प्रकार पाये गए :

फसल	चैतन्यित फसल	समान्य फसल
धान	१८-२०	७-८
बैंगन	८०-१००	४०-५०

शुद्ध लाभ (रूपये) ४०,००० प्रति एकड़

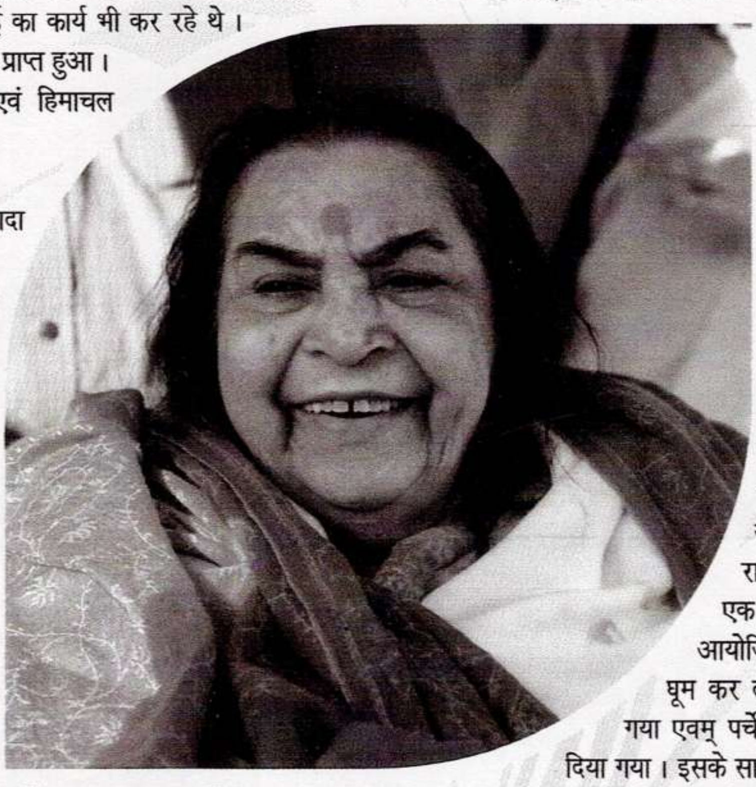

६. राजस्थान में सहज कृषि प्रचार एवं प्रगति

(द्वारा श्री मोकम सिंह (जिला समन्वयक-भरतपुर) एवम् श्री जी.डी. पारीक (सदस्य सचिव, राष्ट्रीय सहज योग कृषि कार्यक्रम, नई दिल्ली))

परम पूज्य श्री माताजी की कृपा से दिनांक २३ जून २०१४ को तहसील कॅमा (जिला भरतपुर राजस्थान) में सहजयोग एवम् सहज कृषि का सांयकालीन सत्र आयोजित हुआ । यहां लगभग १७५ से ज्यादा ग्रामीण लोग आए और लाभान्वित हुए । यहां एक चमत्कार यह हुआ कि आत्मसाक्षात्कार के बाद यहाँ पर बिना पूर्व बादलों के प्रथम मौसमी वर्षा आरम्भ हुई । हर कोई यह चमत्कार देख कर अचंभित था । ग्रामीण व्यक्तियों ने आने वाले मानसून सत्र में बाजरा, ज्वार, एवम् तिल बोने के लिए सहज कृषि की पद्धति अपनाई ।

7. पूर्वोत्तर भारत में सहज कृषि पर विशाल ग्रामीण कार्यक्रम

श्री माताजी निर्मला देवी जी की विशेष अनुकंपा एवम् आर्शीवाद से तथा डॉ श्री जय प्रकाश शर्मा, श्री जगत सूबेदी (प्रदेश समन्वयक), श्री लहर चंद पदवा (जिला समनूवयक-सिलचर), एवम् श्री जी.डी. पारीक के परश्रिम से सहजयोग एवम् सहज कृषि पर एक विशेष मुहिम की गई । यह मुहिम शिलोंग, सिलचर, बदरी बस्ती, भदरपुरा, आदि इलाकों में हुई । यहाँ लगभग ४०० से ज्यादा लोग लाभान्वित हुए । डॉ शर्मा जो की राष्ट्रीय ट्रस्ट से हैं, उन्होंने इसको ७ प्रदेशों में (अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, एवम् त्रिपुरा) अपनाने की इच्छा जाहिर की, क्योंकि इन प्रदेशों में आने वाले महीनों में उपज वाली फसल जैसे धान, नारियल केला, कटहल, रबड़, अनानास, सुपारी, तथा चाय की खेती के लिए अत्यातधिक संभावयता है ।

एक दिन के विशेष कृषि कार्यक्रम के उपरांत सिलचर से २० कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बदरीबस्ती ग्राम में एक छोटा सा सेमिनार एवम् ध्यान आयोजित किया गया । यहाँ पर सारे गांव में घूम कर लगभग २५० परिवारों से सपंर्क किया गया एवम् पर्चे बांटे गए तथा उनको आत्मसाक्षात्कार दिया गया । इसके साथ ही उनको सहज कृषि की प्रयोगात्मक पद्धति भी बताई गई । किसानों के लिए खेतों में धान की फसल के लिए प्रदर्शन भी किया गया, जहां उनको चैतन्यित बीज एवम् जल उपलब्ध कराया गया, तथा चैतन्य कैसे दें इस बारे में श्री जगत सूबेदी जी ने खूद ही धान की फसल पर चैतन्यित जल को छिडक कर दिखाया । वहाँ पर निम्न तकनीकें सिखाई गई :

१. धान : बीज एवम् पौधे तथा खेत को चैतन्यित करने के लिए जल का प्रयोग

२. पशुधनः पशुओं के खाने के लिए चैतन्यित जल एवम् चैतन्यित चारे का उपयोग

३. मतस्यपालन : तालाब में चैतन्यित जल एवम् चैतन्यित मतस्य खाद सामग्री का प्रयोग

४. चाय बागान : चैतन्य देते हुए स्प्रे द्वारा चैतन्यित जल का छिडकाव

५. नारियल, कटहल, रबड, अनानास, सुपारी आदि के लिए चैतन्यित जल का उपयोग एवम् चैतन्य देना।

सहजयोग एवम सहज कृषि को विकसित करने के लिए किसानों को प्रचुर मात्रा में सहज संबंधी साहित्य भी उपलब्ध करवाया गया । एक विशेष समाचार यह था कि वहां के किसान श्री मंदूर भारद्ववाज (जिला बदरीबस्ती) ने अपनी ३५२८० वर्ग फुट जमीन, वहां पर सहजयोग केंद्र बनाने के लिए एवम् सहज कृषि कार्यक्रम के लिए अपर्ण की ।

8. गेहूं की खेती में सहजयोग - चैतन्य के असर उपयोग पर एक रिपोर्ट

वर्ष २०१३-२०१४ के रबी फसल के मौसम में फसल अनुसंधान केंद्र (एन. डी.कृषि एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, फैजाबाद) घाघराघाट, बहराइच (उ.प्र.) में एक प्रयोग किया गया जिसका उदेश्य था आध्यात्मिक शक्ति परमचैतन्य का गेहूं की उपज पर असर देखना, प्रयोग की जमीन में दुम्मट्टी मिट्टी का स्वरूप था जिसकी अमलता ८ थी, कार्बन तत्व में कमी थी, तथा नतरजन, फास्फोरस और निम्मित मात्रा में पोटाश था । प्रयोग एक अतयंत छोटे टुकड़े में किया गया जहां ४ उपयोग किये गए, गेहूं की एक प्रजाति को परम पूज्य श्री माताजी के चित्र के समक्ष रात भर रखा गया एवं अगले दिन बीजों को मिट्टी में डाल दिया गया । १२ दिसम्बर २०१३ को सहज वाले हिस्से में चैतान्यित बीज डाले गए एवं सामान्य हिस्से में मामूली बीज डाले गए । सहज हिस्से में चैतान्यित जल से छिडकाव किया गया । सहज वाले हिस्से में बीज डालने से पहले एवमृ फसल की उपज के दौरान चैतन्यित जल का छिडकाव किया गया ।

प्राप्त आंकडों से यह जाहिर हुआ कि फसल के दाने एवं तने की पैदावर में जमीन की उर्वरता में इजाफे के साथ ही बढ़ोतरी हुई और यह मानक उर्वरकों की मात्रा के ७५-१०० हिस्से से हुआ । इस से यह मालूम हुआ की सहजयोग कृषि पद्धति से ही उर्वरकों में लगभग २५ की बचत की जा सकती है ।

सारिणी : सहजयोग चैतन्य का उपज के मानक एवं गेहूं की फसल पर प्रभाव

उपचार	पौधें की लम्बाई	1000 दानों का वजन (ग्राम)	उपज (qha^{-1})	कुल उपज (qha^{-1})	उपज मानक %
			दाने तना		
T_1-Non-Sahaj + 75% RDF	90.36	38.53	26.93 44.12	71.05	37.90
T_2-Sahaj + 75% RDF	92.03	39.35	30.12 46.68	76.80	39.21
T_3-Non-Sahaj + 100% RDF	91.20	39.75	33.85 48.52	82.37	41.09
T_4-Sahaj + 100% RDF	94.53	40.80	38.52 52.12	90.64	42.49

गेहूं की उपज में सहज तरीके अपनाने पर १३.८ प्रतिशत की ज्यादा उपज दर्ज की गई।

9. रतलाम (मध्य प्रदेश) में पालकी एवं गुरू पूजा

रतलाम शहर में दिनांक १२ एवं १३ जुलाई को एक अत्यंत सुन्दर एवं संतोष प्रदायक आदिशक्ति पूजा संपन्न हुई लगभग २००० सहज योगी इस भव्य आयोजन में शामिल हुए।

10. सेना में सहज प्रचार

पृष्ठभूमि

परम पूज्य श्री माताजी श्री निर्मल देवी सहज योग ट्रस्ट (राष्ट्रीय ट्रस्ट) पूरे भारतवर्ष में फैला हुआ है जिसमें हाल ही की गणना के मुताबिक लगभग २०१५ केंद्र हैं और लगभग २,००,००० से अधिक सहजयोगी हैं । इसकी सही गणना करना मुश्किल हैं क्योंकि बहुत से हिस्सों में लोग छोटी छोटी सामूहिकताओं में ध्यान करते हैं जिसका ज्ञान वहां के संचालकों एवं शहर तथा जिले के समन्वयकों को भी नहीं होता है । इनमें से कुछ लोग सेमिनार एवं पूजाओं में आ जाते हैं और इस प्रकार हमें इनके होने का पता लगता है । इसी प्रकार सेना बलों में पुलिस बलों में, और निजी कंपनी के क्षेत्रों में हमें नहीं ज्ञान हैं कि कितने ऐसे लोग है जिन्होंने सहजयोग को अपनाया है लेकिन यह जानना अत्यंत आनंदित करता है कि सहजयोगी जन सहज योग का प्रचार करने में कितने अधिक कार्यान्वित है जब भी उन्हें मौका मिलता है ।

मथुरा

हमारी देवी माँ की अनुकम्पा से, पिछले दिनों हमें मौका मिला की हम भारतीय सेना की मथुरा एवं अंबाला की दो प्रबल आक्रमक इकाइयों में अत्यंत कठिन एवं मनोरम आत्मसाक्षात्कार कार्यक्रमों में हिस्सा ले पाए । मथुरा में हमें आमंत्रित किया गया ताकि हम कुछ वरिष्ठ अधिकारीगण एवं अन्य अधिकारी, एवं कष्ठि कमीशन, प्राप्त अधिकारियों तथा सैनिकों को आत्मसाक्षात्कार के बारे में बता सकें । यह कार्य दिनांक ०५ एवं ०६ जुलाई २०१४ को हुए । वहां के कमांडर, एक लिफटेनैंट जनरल, साथ में उनके स्टाफ के मुखिया जो कि एक मेजर जनरल थे, एवं उनकी पत्नियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया । देखने वाली बात वहां यह थी कि वहां पर सबने देवी माँ के चित्र से आत्मसाक्षत्कार प्राप्त किया और हम उनको ज्यादा इधर उधर घुमा कर कुण्डलिनी शक्ति की जागृति के बारे में बहुत सारे स्पष्टीकरण नहीं देने पड़े ।

किसान मेला, रायबरेली (उ.प्र.)

रायबरेली में आयोजित किसान मेले में 6 मार्च को एक जन कार्यक्रम हेतु सहजयोग का स्टॉल रखा गया। अनेक साधकों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया एवं कृषि में सहजयोग के लाभ के बारे में जानकारी ली। लगभग 2,000 लोग स्टॉल पर आये और अधिकांश ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। रायबरेली के जिला मजिस्ट्रेट श्री अमित कुमार भी सहजयोग के स्टॉल पर आये।

लखीमपुर खेड़ी (उ.प्र.) में सहज रैली

10 मार्च को निगासेन के मुख्य बाज़ार से, लाउडस्पीकर, पर्चों एवं बैनरों के साथ सहज रैली की शुरुआत हुई। लगभग 2.5 कि.मी. का फासला 2 घंटों में तय किया गया। सहज रैली बी०डी०ओ० कार्यालय पर जा कर समाप्त हुई एवं वहाँ पर एक जन कार्यक्रम किया गया। 50 साधकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

24 मार्च को, गोला मुख्य बाज़ार से सहज्योगियों ने लाउडस्पीकर, पर्चों एवं बैनरों के साथ सहज रथ यात्रा प्रारम्भ की। 2 घंटों में लगभग 2 कि.मी. का फासला तय कर कृष्ण वाटिका में रैली समाप्त की गई एवं उसको एक जन–कार्यक्रम में तब्दील कर दिया गया। 45 साधकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

झारखंड में प्रचार के प्रयास (जनवरी-मार्च 2013)

स्थानः स्वदेशी मेला स्टॉल, मज़दूर मैदान, सेक्टर 4, बोकारो स्टील सिटी, झारखंड।

श्री माताजी का प्रवचन भी चलाया गया। कार्यशाला के अन्तिम दिन, श्री वसंत ने भी विद्यार्थियों के लिए ध्यान का सत्र लिया।

महाराष्ट्र से समाचार

उपज पर चैतन्य का प्रभाव देखने के लिए कृषि प्रयोग की शुरुआत 29 मई 2011 को श्रीरामपुर के नज़दीक उक्कलगाँव में श्री थोरट के खेत में एक वैज्ञानिक प्रयोग के साथ की गई। यह महाराष्ट्र सहज योग कमेटी द्वारा कुछ महीनों पहले संगठित "कृषि कमेटी" द्वारा संयोजित किया गया। इसका मूल विचार श्री माताजी द्वारा पहले संगठित की गई अनेक कमिटियों से आया–कृषि उत्पाद पर चैतन्य के प्रभाव को देखना। महाराष्ट्र कमिटी पूरे महाराष्ट्र में ऐसे प्रयोग शुरू

करने की योजना बना रही है, सहजी किसानों को इसमें जोड़ कर, उनके खेतों का शोध कार्य में उपयोग करके। इस साल में, मानसून के आने से पहले, कृषि कमिटी की देखरेख के अंतर्गत करीब 100 परिकल्पनाएँ सब ओर शुरू की जाएँगी।

प्रक्रिया को शुरू करने के लिए, पहले प्रयोग को उक्कलगाँव में शुरू किया गया। पौधे जैसे आम के, नारियल के इत्यादी और बीजों को एक सामूहिक पूजा करके चैतन्यित किया गया। 100 सहज योगी परिवारों ने एकत्रित हो श्री माताजी के कमलचरणों में शाखंभरी देवी पूजा अर्पित करी और खेत में हवन किया, और पेड़ों और बीजों को कमलचरणों में चैतन्यित किया गया, सामूहिक प्रार्थना द्वारा। प्रो० कुलकर्णी इस दल का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसमें कृषि क्षेत्र के नामी सहज

एच. एच. श्रीमाता जी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट

अन्तर्राष्ट्रीय दीपावली महोत्सव

16–18 नवम्बर 2012 जयपुर

योग्यता प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती जी. डी. पारीक

पुत्र/पुत्री/पत्नी/पति श्री/श्रीमती बी. डी. पारीक

निवासी राजस्थान

को कृषि (राष्ट्रीय सहज कृषि प्रोजेक्ट)

के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर मुख्य अतिथि श्री अशोक गहलोत मुख्य मंत्री राजस्थान, जयपुर

द्वारा सम्मानित किया गया है।

ट्रस्टी (राष्ट्रीय सहज योग ट्रस्ट)	राज्य समन्वयक (राष्ट्रीय सहज योग ट्रस्ट)	शहर समन्वयक (राष्ट्रीय सहज योग ट्रस्ट)

भास्कर खास

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र के 10 सेंटर्स में सहज कृषि तकनीक पर रिसर्च, परिणाम चौंकाने वाले

अब साधना व मंत्रों से डेढ़ गुना ज्यादा पैदावार

29 नवं० 2015

लता खंडेलवाल | जयपुर 30.11.15

साधना और मंत्रों से ज्यादा पैदावार। भले ही मामला आस्था का लगे, लेकिन ऐसा हो रहा है। विज्ञान प्रमाण मांगता है लेकिन वह भी इस पद्धति को कारगर बता रहा है। तभी तो राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र के 10 रिसर्च सेंटर्स में इस पर शोध जारी है। खेती की इस तकनीक को नाम दिया गया है सहज कृषि। खुद कृषि वैज्ञानिक मान रहे हैं कि इस पद्धति से पैदावार तो बढ़ती ही है, बिना कीटनाशक के फसल भी सुरक्षित रहती है। इटली, पोलैंड, स्विटजरलैंड और फ्रांस से भी शोधार्थी तकनीक सीखने भारत आ रहे हैं। देश के 20 राज्यों में सहज कृषि चल रही है। जयपुर में इस पद्धति को माताजी निर्मला देवी योग ट्रस्ट लेकर आया। ट्रस्ट की यूथविंग के चेयरमैन लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. कपूर का दावा है कि काजरी ने भी इस पद्धति का परीक्षण किया है। जिससे 30% पैदावार अधिक मिली। यह भी दावा है कि सहज खेती से पैदा हुए अनाज में लंबे समय तक कीड़े भी नहीं लगते।

निगेटिविटी खत्म कर बीज और पानी को करते हैं परम चैतन्य

गुवाहाटी में पानी-बीज को चैतन्य करते ट्रेनर।

सहज योग कृषि व माताजी निर्मला देवी योग ट्रस्ट के प्रचार-प्रसार अध्यक्ष श्रीचंद चौधरी ने बताया-इस पद्धति के तहत सामान्य बीजों-पानी के बजाय इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वाइब्रेशन से तैयार बीज और पानी का खेती में इस्तेमाल किया जाता है। बीज-पानी को 'परम चैतन्य' की स्थिति में लाया जाता है। आध्यात्मिक शक्ति के सामने दीपक प्रज्वलित किया जाता है और उसके आगे पानी और बीज रखे जाते हैं। दीपक से पानी और बीज की निगेटिविटी खत्म होती है। मंत्रोच्चारण से पानी और बीज इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वायब्रेट हो जाते हैं। पानी को कुएं में मिला दिया जाता है। बीजों को खेती में इस्तेमाल किया जाता है।

कृषि वैज्ञानिकों ने माना-तकनीक प्रभावशाली

सहज योग तकनीक का फसलों में सकारात्मक परिणाम सामने आया है। 30% तक अधिक फसल मिलने के प्रमाण हैं।
-घनश्यामदास पारीक, जॉइंट डायरेक्टर (सेवानिवृत्त), कृषि विश्वविद्यालय, जयपुर

हम लोगों ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र के निर्देश पर रिसर्च की है। नतीजे आ चुके हैं, अभी खुलासा नहीं कर सकते।
-डॉ एके शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, काजरी (जोधपुर)

30.11.15

सहजयोग परिवार का राष्ट्रीय समागम शुरु

तीन हजार साधक हुए शरीक

13.7.2014

रतलाम। सहज योग परिवार के देशभर से आए साधकों ने यहां अखिल भारतीय गुरु पूजा महोत्सव एवं समागमन की शुरुआत गाजियाबाद से आए प्रसिद्ध गायक दीपक वर्मा के गाए गणेश भजन -गाइये गणपति जग वंदन शंकर सुमन भवानी नंदन से हुई। तत्पश्चात सहजयोग के राष्ट्रीय ट्रस्ट के उपाध्यक्ष दिनेश राय (दिल्ली), राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुरेश कपूर (दिल्ली), राष्ट्रीय प्रचार प्रमुख चन्द्र चौधरी (जयपुर), राष्ट्रीय ट्रस्ट के सदस्य ग्रोगेश लोढ़ा (भोपाल) रतलाम, समन्वयक वासुदेव शुक्ला, पूर्व समन्वयक महेन्द्र व्यास आदि ने दीप प्रज्वलित कर प.पू. श्रीमाता जी श्री निर्मला देवी के श्रीचरण पर पुष्प अर्पित कर महोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया।

इस अवसर पर दिनेश राय ने कहा कि हमें सभी धर्मो और समाजों में समन्वय स्थापित कर जात पात से परे जन जन के प्रति प्रेम पूर्ण व्यवहार, अहंकार का त्याग, पवित्र आचरण, भ्रष्टाचार रहित जीवन शैली का आदर्श उपस्थित कर प.पू. श्रीमाता जी निर्मला देवी द्वारा अधूरे छोड़े गए विश्व कल्याण के कार्य को पूरा करने का आव्हान किया एवं राजेश जोहरी ने चक्रों एवं नाड़ियों के शुद्धिकरण पर व्याख्यान दिया।

श्रीमती नीता राय (दिल्ली) एवं श्रीमती रेखा डोशी (इंदौर) ने महिला साधकों को सुखी गृहस्थ जीवन जीने के सरल एवं आसान गुर सिखाएं, साथ ही महिला साधकों को भी सहज ध्यान धारणा का प्रचार प्रसार करने की प्रेरणा दी। सहज कृषि के राष्ट्रीय समन्वयक जी.डी. पारिख जयपुर ने चैतन्यीत पानी एवं बीजों से कृषि में होने वाले आश्चर्यजनक लाभों के विषय में बहुत ही सरल तरीके से कृषकों को जानकारी प्रदान की। श्री पारिख ने बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी सहज तकनीक की प्रशंसा की। मुखीराम जी एवं टीम नोयडा ने भजनों की शानदार प्रस्तुति देकर समस्त श्री माता के भक्तों को भाव विभोर कर दिया। साथ ही नागपुर से पधारे युवा भजन गायक श्याम जैन ने भी भजन संध्या में अपने समधुर भजनों के माध्यम से समस्त श्रोताओं को ध्यान की गहराई में पहुंचा दिया।

रात्रि में रतलाम के युवा शक्ति बच्चों ने गणेश के जन्म पर आधारित लघु नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। सहजी युवा शक्ति ने धार्मिक भजनों पर नृत्य की सुंदर व्यंग नाटक के माध्यम से कटाक्ष भी किए। कपिल अग्रवाल के मार्गदर्शन में ईश्वरसिंह पंवार, रुचि शुक्ला, शानू टांक, जया सिसौदिया, श्रुति राठौर, नीतू बर्मन, छाया वर्मा, पुष्पेन्द्र वर्मा, मानसी जायसवाल आदि ने दर्शकों को भरपूर मनोरंजन प्रदान किया। इसी कड़ी में धार सहजयोग परिवार के युवा शक्ति बच्चों ने नई रौशनी लघु नाटक की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर श्रीमती नागेश्वरी (दिल्ली) राष्ट्रीय ट्रस्ट महिला सदस्य, हरिश चौधरी (नवसारी) गुजरात राज्य समन्वयक, महेश सोनी राजस्थान (जयपुर) राज्य समन्वयक, राजेंद्र रिनवा (शाजापुर) सदस्य म.प्र. सहज योग समिति, प्रदीप रस्से (रतलाम) सदस्य म.प्र. सहजयोग समिति आदि प्रमुख रुप से उपस्थित थे।

अनिल जोशी (इंदौर) ने लंच के पूर्ण सत्र का संचालन किया एवं सांध्य सत्र का संचालन वृजराजसिंह बृज (रतलाम) ने किया। देश के विभिन्न राज्यों से पधारे सहज योग साधकों की 2500 से 3000 की गरिमामय, धार्मिक एवं अनुशासित उपस्थिति में सभी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

आज रविवार को सुबह का ध्यान एवं प्रात: 10 बजे निर्मल धाम आश्रम से श्रीमाता जी श्री निर्मला देवी चित्रमय झांकी, पालकी सहित गाजे बाजे एवं बेलगाड़ी आदि के साथ अतिथि गार्डन बरबड़ स्थित पूजा पांडाल लाई जाएगी।

प्रात: 11 बजे प.पू. माता जी श्री निर्मलादेवी के गुरु स्वरुप की पूजा की जाएगी। दोपहर दो बजे भोजन प्रसादी एवं समापन होगा।

बीज कुदरत का करिश्मा

बीज कुदरत का करिश्मा है। अपनी छोटी सी काया में एक पूरा पौधा छुपाए। माटी यदि माँ है तो बीज प्राण है खेती का। बीज फसल उत्पादन का प्रमुख आदान है। खेती की शुरुआत बीज से ही होती है। इसीलिए बीज का बढ़िया होना जरूरी है। बीज जो अंतिम रूप से हमें प्राप्त होता है वह केवल संसाधन और अच्छे भंडारण का ही परिणाम ही नहीं, वरन् फसल के उगाने के ढंग व बीज फलों में से बीज निकालने के तरीकों पर भी निर्भर करता है। कटाई के समय आंतरिक रूप से क्षतिग्रस्त होने पर भंडारण में बीजों का अंकुरण अधिक समय तक नहीं बनाए रखा जा सकता है। इसलिए बीज उत्पादन के लिए बीजों की बुआई से लेकर उनको वितरण के लिए तैयार करने की सभी प्रवृत्तियों पर अच्छी तरह ध्यान देना आवश्यक है।

अच्छा बीज कौन है?

अच्छा बीज सही किस्म का होता है। उसमें दूसरी किस्मों की मिलावट नहीं होती। उससे उगाई फसल में सभी पौधे समान आकार व गुण वाले होते हैं। अच्छे बीज में फालतू चीजों अठैर खरपतवार के बीजों की मिलावट नहीं होती। वह साफ-सुथरा होता है। रेत, कंकड़, पत्थर, तिनके, फूस, कटे-टूटे बीज से मुक्त होते हैं।

अच्छा बीज सही आकार का व तंदुरुस्त होता है। भरेपूरे तंदुरुस्त दाने में भरपूर भोजन जमा होता है। पूरा भोजन मिलने से पौधे भी शुरू से ही तंदुरुस्त रहते हैं। तंदुरुस्त पौधे ज्यादा उपज देते हैं। सिकुड़े अधपके बीज कमजोर होते हैं।

अच्छे बीज रोगी नहीं होते। उनमें फफूँद नहीं लगा होता है। उन्हें रोगी पौधे फसल से इकट्ठा नहीं किया जाता। उन्हें भंडार में भी रोगों से बचाया जाता है।

अच्छे बीज का जमाव बहुत अच्छा होता है। इससे खेत में पौधों की संख्या कम नहीं होने पाती और भरपूर उपज मिलती है।

अच्छा बीज अधिक पुराना नहीं होता है। उसमें अंकुरण की पूरी ताकत मौजूद रहती है। पुराना बीज बदरंग हो जाता है, जबकि नया बीज चमकदार होता है। अच्छा बीज अच्छी खेती की शुरूआत है।

अच्छे प्रमाणित बीज के लक्षण

अनुवांशिक शुद्धता – बीजों में आनुवांशिक शुद्धता होनी चाहिए, जिसका अर्थ है बीज उसी किस्म के हो जिनके नाम पर उन्हें लिया जा रहा है एवं उसमें किसी दूसरी किस्म के बीज मिले हुए न हों। इसलिए ऐसी फसलों का केवल प्रमाणित बीज किसी विश्वसनीय एजेंसी अथवा बीज विक्रेता से लें।

भौतिक शुद्धता – बीज में खरपतवारों एवं दूसरी फसलों के बीज नहीं मिले हों। यह भी आवश्यक है कि उनमें कंकड़-पत्थर, मिट्टी इत्यादि नहीं मिले हों। फसलों के बीज के साथ खरपतवार उग आते हैं और फसल के प्रतियोगी बन जाते हैं।

परिपक्वता – बीज पूर्ण रूप से परिपक्व हों क्योंकि अपरिपक्व बीजों का अंकुरण कम होता है। इस कारण फसल की कटाई तब करनी चाहिए जब उसमें शारीरिक क्रियात्मक परिपक्वता आ गई हो। इस समय बीज में अधिकतम पोषक पदार्थ एकत्रित होता है, अर्थात् उसका शुष्क भार अधिकतम होता है।

आयु – बीज उसी साल का उत्पन्न किया हो। यदि बीज पुराना हुआ तो उसकी जीवन क्षमता तथा बीज-ओज कम हो जाएगा। फलतः उसका अंकुरण कम होगा, जिससे खेत में अनुमोदित पौध संख्या कम हो जाएगी और उपज कम प्राप्त होगी।

अंकुरण – क्षमता-बीजों में अंकुरण की उच्च क्षमता एक आवश्यक गुण है। बीज अंकुरण क्षमता 80 प्रतिशत से कम नहीं हो। बोआई के पूर्व बीजों की अंकुरण क्षमता की जाँच कर लें। जीवन क्षमता - यदि बीजों में जीवन क्षमता नहीं हुई तो उनका अंकुरण कम एवं असमान होगा जिससे उत्पादन घट जाएगा। इसलिए यह आवश्यक है कि जो बीज चुना जाए, वह उच्च जीवन क्षमता वाला हो।

रंग, आकार तथा आकृति में समानता – बीजों को पुष्ट और सुडौल होना चाहिए। सिकुड़े एवं छोटे आकार के बीज या तो रोगग्रस्त होते हैं अथवा अपरिपक्व। बीज के रंग, आकार, आकृति में समानता का अर्थ है बीज शुद्ध और अच्छा हो। सीडड्रिल से बोआई के लिए बीज का एक आकार का होना आवश्यक है।

प्रसुप्ति – अंकुरण की सभी अनुकूल दशाएँ रहने पर भी बीज नहीं अंकुरता है। उस अवस्था को प्रसुप्ति कहते हैं। बीज को प्रसुप्ति-अवस्था के बाद या उनकी प्रसुप्ति नष्ट करके ही बोना चाहिए।

मक्का की बीमारियों की रोकथाम

मक्का का विश्व कृषि में महत्वपूर्ण स्थान है। गेंहू और चावल के बाद भारत में मक्का तीसरा सबसे महत्वपूर्ण खाद्य अनाज है। मक्का को अनाज के बीच अपनी उपज क्षमता के कारण चमत्कारिक फसल या अनाज की रानी के रूप में जाना जाता है। भारत में मक्का लगभग 9.26मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में 2.4 मिलियन टन उत्पादन के साथ उगाया जाता है और औसत उत्पादकता लगभग 2560 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर हैं।

बीज, गलन और अंगमारी का रोग मक्का में पिथियम, पैनिसिलियम, फ्यूजेरियम व स्कलेरोसियम नामक फफूंद के कारण बीज या उगता हुआ पौधा गल या मर जाता है। जिससे जमाव कम होता है और पौधों की संख्या कम भी हो जाती है। मेडिस पत्ता अंगमारी का रोग मक्का में बाईपोलरिस मेडिस नामक फफूंद से पत्तों पर स्लेटी व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं तथा उसके चारों ओर गहरे पीले हरे रंग के होते हैं। पत्तें सुखे जाते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में ही उपचार मिल जाए तो उपज को भारी हानि से बचाया जा सकता है। पत्ती अंगमारी की बीमारी मक्का में राईजोक्टोनिया सोलेनाई नामक फफूंद के कारण मक्का में बीमारी होती है, यह जो फसल के पत्तों के घास या जमीन से सपर्श होने के कारण होती है। इस रोग से पत्तों और शीथ पर बड़े-बड़े धब्बे बनते हैं जो कि पत्तों तथा शीथ को सुखा देते हैं। इन धब्बों में बैण्ड बन जाते हैं। इस रोग से दानों का आकार तथा वजन कम हो जाता है।

सामान्य रतुआ नामक बीमारी पक्सीनिया सोरगाई नामक फफूंद के कारण होता है। इससे स्फोर पस्टयूल पत्तियों पर अधिक मात्रा में होते है। गोल्डन ब्राऊन स्फोर पत्ती का दोनों सतहों पर विकीर्ण छितरा-बिखरा होता है तथा पादक परिपक्कता दिखाई देते है। पिथियम तना गलन की बीमारी पिथियम एफेडिरमेटन नामक फफूंद के कारण होता है। यह रोग पौधे की नीचे की तीन या

चार पोरियों में से किसी एक को प्रभाव पड़ता है। इससे तन की बाहरी शाल और केन्द्रिय भाग गल जाते है। पौधा गिर जाता है, गिरा हुआ पौधा कुछ दिनों तक जीवित रहता है क्योंकि अभी उसके वैसकुलर बंडल रोगग्रस्त वाले भाग व रूई जैसे रेशे से बन जाते हैं। जीवाणु तना गलन की बीमारी इर्विनिया, काईसेथिमि नामक जीवणु के कारण होता है। इस बीमारी में सबसे पहले ऊपर के पत्ते सूखने या मुरझाने लगते हैं। तने के नीचे की पोरियां नरम व बदरंग हो जाती है। अपना हरा रंग खोने क साथ-साथ ऐसी दिखाई देती है जैसे तने का रोगग्रस्त भाग पानी में उबाला गया हो। रोगग्रस्त पौधे गिर जाते हैं तथा गलने के बाद बदबू आती है तथा अंत में मर जाते हैं।

इन रोगों से बचाने के लिए कृषि किटनाशक क्षेत्र में बहुत सी रासायनिक दवाईयां हैं, जिनका उपयोग सामान्यतः कृषक करते रहते हैं। कृषि अनुसंधान केन्द्र भी उन किटनाशक रसायन दवाईयों को भी सुझाव देते हैं। इन्हीं दवाईयों के अधिक प्रयोग के कारण फसल में प्राकृतिक तत्व नष्ट हो जाते हैं। यह ठीक हैं कि फसल उन रोगों से बचायी जा सकती है और पैदावार भी बढ़ती हैं। लेकिन वही रसायन मक्का के माध्यम से मनुष्य के शरीर में जाते हैं तो उनकी रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता कम करते हैं तथा साईड के अन्य दुष्प्रभावों को जन्म देते हैं, जिससे मक्का के जो तत्व प्राकृतिक तौर से मिलने चाहिए वे फसल में नहीं होने के कारण नहीं मिल पाते हैं।

बेहतर होगा कि कृषक सहजयोग पद्धति से फसल पैदा करें। सहजयोग पद्धति सर्वाधिक -आसान व बिना खर्चे का दिव्य तरीका है, ये तरीका वही हैं जिससे सारा संसार स्वतः सुचारू रूप से संचालित हो रहा है। इसी शक्ति को पहले कृषक को स्वयं में जगाना होती है और उसी शक्ति का प्रयोग भूमि, बीज, सिंचाई में करके फसल प्राप्त होने तक भी प्रयोग की जाती है। संसार के 60 देशों में वैज्ञानिकों ने सहज पद्धति का समर्थन किया है इसलिए हमारा नैतिक व आध्यात्मिक कर्तव्य हैं कि सहजयोग अपनाकर सहजयोग पद्धति से कृषि को बढ़ावा देने की दिशा में काम करें।

सहज पद्धति से कृषि करने पर किटनाशक का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं पडती। यदि पड़ती भी है तो यदा-कदा और वह भी वैज्ञानिकों द्वारा निर्धारित मात्रा से भी कम मात्रा में रसायन का प्रयोग करने से काम चल जाता है। रोगों से बचाव का सबसे अ%छा तरीका यह हो किटनाशक, रसायन, दवाईयों के उपयोग करने के बजाय उस शक्ति के साथ बीजारोपण, सिंचाई आदि करके कृषि की जाना अधिक विवेकशीलता है न कि रोग पैदा होने पर उसका ईलाज करना। अर्थात् रोग पैदा होने के पहले ही रोकथाम हो जाना सर्वाधिक सुरक्षित ईलाज है।

राष्ट्रीय सहज कृषि प्रोजेक्ट

श्रीमाताजी ने बतलाया है कि बाईब्रेशन (चैतन्य लहरियाँ / स्पन्द) एक जीवन्त प्रक्रिया है जो सोचती है और कार्य करती है। जिस प्रकार लोहे का चुम्बक पर प्रभाव होता है उसी प्रकार यह कार्य करती है। सहजयोग द्वारा प्रसारित चैतन्य लहरियों का प्रभाव मानव शरीर के उत्थान के साथ-साथ सभी जीवन्त चीजों पर क्रमशः पृथ्वी, पानी, वनस्पति, वातावरण पर कार्य करता है। जिसे हम कृषि, बागवानी, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, मछलीपालन, टिश्यू कल्चर, खाद्यान्न, फल, सब्जी, मसाले, औषधियाँ, फूलों की खेती इत्यादि में अपनाकर अधिक गुणवत्ता उत्पादन लेकर आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ होकर किसान खुशहाल हो सकता है।

सहज कृषि पर सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1980 में पुणे के फार्महाऊस में सूरजमुखी फसल में बड़े साईज 12 इंच (30 से.मी.) व्यास का 2 किलो वजन फूल तथा औसतन तेल मात्रा 250 एमएल प्राप्त हुआ। इसके बाद राहुरी कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय सहज कृषि परीक्षण गेहूँ फसल वर्ष 2002-2004 जयपुर, ऑस्ट्रिया (यूरोप) वर्ष 1988 एवं अन्य शोध संस्थानों, कृषकों के खेतों पर प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। उनके सकारात्मक एवं अच्छे परिणाम प्राप्त हुए।

राजस्थान में सहज कृषि कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय दिवाली पूजा अक्टूबर, 2011 में सहज कृषि प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें उत्साहजनक परिणामों को ध्यान में रखते हुए जनवरी, 2012 में राष्ट्रीय सहज कृषि परियोजना के विस्तृत प्रस्ताव तैयार कर नेशनल ट्रस्ट, नई दिल्ली को भेजा गया, जिसमें पदाधिकारी प्रस्तावित किये गए। प्रत्येक राज्य में समय-समय पर नए पदाधिकारियों का समावेश किया गया।

1. श्री चंद्र चौधरी, नेशनल ट्रस्टी, अध्यक्ष प्रचार-प्रसार कमेटी - अध्यक्ष
2. डॉ. एम.वी. कुलकर्णी, नेशनल ट्रस्टी महाराष्ट्र राज्य को-ऑर्डिनेटर - सदस्य - (पश्चिम भारत, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गोवा)
3. डॉ. जी.डी. पारीक, राजस्थान (संयुक्त निदेशक कृषि) - पदेन सचिव एवं सदस्य (राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, एम.पी.)
4. डॉ. मंगेश देशमुख - सदस्य
5. श्री टी.एम. बाबा, आंध्रप्रदेश - सदस्य
6. डॉ. अवधेशचंद्र, राजस्थान - सदस्य
7. डॉ. सारंगी, उड़ीसा- सदस्य

उपरोक्त प्रस्ताव नेशनल ट्रस्ट, नई दिल्ली से अनुमोदन के बाद पूरे भारत में 2 वर्ष तक 7 सहज कृषि सेमीनार / वर्कशॉप का आयोजन कर करीबन 780 सहजी कृषि को-ऑर्डिनेटर प्रशिक्षित कर उनके द्वारा अपने-अपने राज्यों में जिला, ब्लॉक, तहसील, ग्राम स्तर पर प्रशिक्षणों का आयोजन कर करीबन 3 लाख कृषकों को प्रशिक्षण एवं सहज कृषि कार्यक्रमों की शुरुआत की गई। नेशनल ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रत्येक पूजा में सहज कृषि कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर व्यावहारिक तकनीक प्रदर्शन देकर लाभावित किया गया।

अक्टूबर, 2011 से लगातार भारत एवं विदेशों में भी सहज कृषि कार्यक्रम का सराहनीय कार्य हुआ। सहज योग की चैतन्य लहरियों में फसलों में अंकुरन फुटान / उत्पादन एवं क्वालिटी में आशातीत वृद्धि देखी गई।

सहज कृषि तकनीक में सर्वप्रथम उन्नत किस्म के बीज व पानी को श्री माताजी के फोटो के समक्ष 24 घंटे रखकर चैतन्यमय किया जाता है तो इसमें बीज के भ्रूण (एम्बीरिया) जाग्रत हो जाता है तथा इन बीजों के बोने से साधारण बीज से 2-3 दिन जल्दी अंकुरण के साथ बीज का विकास तेजी से होता है। पिकअप ग्रोथ (पौधों की बढ़वार) अच्छी होने से फसल की बढ़वार में आशातीत वृद्धि देखी गई है। सिंचाई में चैतन्यमय पानी के उपयोग से वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर करीबन 10 से 15 प्रतिशत तक वृद्धि देखी गई है।

सहज कृषि प्रचार-प्रसार एवं सहज कृषि प्रदर्शनी के आयोजन में उत्कर्ष अवार्ड राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली एवं अन्य राज्यों में प्राप्त हुए। फरवरी, 2012 से जुलाई, 2018 तक सहज योग कार्यक्रम, वर्कशॉप, सेमीनार, जन जागरण कार्यक्रम, फील्ड डे, पिकनिक के करीबन 218 कार्यक्रमों का आयोजन कर लाखों कृषकों को लाभांवित किया जा चुका है। विदेशों में कबैला (इटली), बेलजियम, रूस, स्पेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, बुडापेस्ट, वेनिन (अफ्रीका), मलेशिया, नेपाल, कनाडा, अमेरिका (ब्राजील, न्यूयॉर्क), स्विटजरलैण्ड, रोम इत्यादि में भी सहज कृषि कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है। सहज कृषि कार्यक्रम की उपलब्धियों को देश के बाहर 85 देशों में ईमेल द्वारा जानकारी उपलब्ध करवाई गई।

सहज कृषि कार्यक्रम की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में दिनांक 20.05.2015 को जिसमें 55 कृषि वैज्ञानिक उपस्थित थे तथा अनुपालन में 10 अनुसंधान केंद्रों पर (राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना) विभिन्न फसलों पर परीक्षण किये गए, जिनके सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। इसकी अनुसंधान रिपोर्ट तैयार कर नेशनल ट्रस्ट नई दिल्ली को भेजी जा चुकी है।

सहज योग एवं सहज कृषि पर पहला प्रस्तुतीकरण (इन मेडिटेशन एंड प्रोडक्टविटी इन एग्रीकल्चर) 5 मई, 2015 को एक्पो. 2015 मिलान (इटली) में किया गया जिसमें 140 देशों में प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अलावा कृष्ण पूजा एवं गणेश पूजा 18 से 28 अगस्त, 2017 को कबैला (इटली) में सहज कृषि का प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर 32 देशों के सहजियों को जानकारी दी गई। श्री इजियो प्रेदिनी जनरल मैनेजर, वर्ल्ड फाउंडेशन सहजयोग द्वारा भारत में सहज कृषि कार्यक्रम 4 चरणों में क्रियान्वयन किया जा रहा है, जिसमें श्री राजेश देसारी (हैदराबाद) एवं 5 सहजी (भारत) से अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

1. प्रोजेक्ट टास्क - 1 - सब्जी, फसल, खाद्यान्न, फल एवं फूलों की उत्पादन तकनीक।
2. प्रोजेक्ट टास्क - 2 - समन्वित कार्यक्रम भेड़, बकरी, बतख, मुर्गीपालन, मछली पालन।
3. प्रोजेक्ट टास्क - 3 - सामुदायिक एप्रोच।
4. प्रोजेक्ट टास्क - 4 - सरकारी कार्यक्रम।

सहज कृषि कार्यक्रम का आगामी वर्षों में पूरे यूरोप में जन जागरण किया जाना प्रस्तावित है। सहजी किसान भाइयों की माँग को ध्यान में रखते हुए सहज कृषि कार्यक्रम के प्रचार एवं प्रसार हेतु वेबसाईट www.sahajkrishi.com हिन्दी एवं अंग्रेजी में तैयार किया गया, जिसमें सभी तकनीकी जानकारी एवं साहित्य उपलब्ध हैं।

प्रचार-प्रसार की विधि

7. पुष्प संभवतया गुलाब के उपयोग किए जाएँ, गेंदा वर्जित है। हार की आवश्यकता नहीं है।
8. मानव आकृति चार्ट यदि वक्ता की पहुँच में रहे तो अधिक श्रेष्ठ है, जिससे किसी अन्य को संकेत द्वारा बताने के लिए खड़ा करने से बचा जा सके और कम से कम सहजयोगियों से अधिक से अधिक काम पूर्ण होने की संभावना रहे। इससे जिज्ञासुओं का चित्त व दृष्टि भी कभी वक्ता की ओर तो कभी चार्ट की ओर भटकने से बचा जा सकता है।
9. दरियाँ व अन्य बिछात उसी क्षेत्र के सहजयोग केंद्र से अथवा टेंट हाऊस से व्यवस्था कर कार्यक्रम प्रारंभ होने से 10 मिनट पूर्व तक पूर्ण बिछात कर लेना चाहिए और बिछात इस प्रकार की जाए कि एक ओर महिलाएँ व दूसरी ओर पुरुष बैठ सकें तथा बच्चे अंत में पीछे बैठ सकें। यदि स्थान हो तो बच्चों को महिलाओं व पुरुषों के बीच पंक्तिबद्ध बैठाया जाए।
10. गाँवों में महिलाओं के लिए पृथक स्थान हो और पुरुषों के लिए पृथक स्थान और बच्चों के लिए पृथक स्थान हो तथा महिलाओं को सहजयोगी बहनें समझायें व पुरुषों को सहजयोगी भाई समझायें। यह कठोरतापूर्वक पालन किये जाने योग्य नहीं है, किंतु संभवतया ऐसा हो सकता है तो अवश्य किया जाना चाहिए।
11. गाँवों में या अन्यत्र कहीं कुछ नकदी या सामान या कर्ज आदि रूप में लेन-देन से बचें। दान व आर्थिक मदद करने से भी बचें, क्योंकि जहाँ कहीं भी इस प्रकार का परमार्थिक व आध्यात्मिक कार्यक्रम करने जा रहे हैं तो संभव है कि वे आपसे कुछ अपेक्षा रखते हों और इस लालच में कार्यक्रम करने या कार्यक्रम में शामिल होने को आतुर हुए हों। जैसा कि ईसाई मिशनरियां व अन्य सामाजिक संस्थाओं, राजनैतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है।
12. जहाँ जनकार्यक्रम किया गया है वहाँ आगे के लिए सप्ताह में एक बार सहजयोग करवाने व लोगों को एकत्रित होने की तथा फालोअप करवाने की संभावनाएँ तलाशना चाहिए।
13. गाँवों में प्रायः बिछात या दरियाँ ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, क्योंकि वहाँ पर पर्याप्त साधन बिछात के किसी न किसी के पास गाँव में होते हैं इसलिए उन्हीं से बिछात करवाने हेतु कार्यक्रम निश्चित करते समय पहले से ही बता देना चाहिए और गाँव में कार्यक्रम के लिए सरपंच या प्रमुख से संपर्क करें तो अधिक सुविधाजनक रूप से कार्यक्रम पूर्ण हो सकता है।

14. गाँवों में जनकार्यक्रम के लिए सरपंच मंत्री, पटवारी, प्रमुख से संपर्क करके पूरा किया जाएगा तो किसी भी गाँव में बिना किसी पहचान के कार्यक्रम करना संभव है।
15. धुपाड़ा कण्डा जलाकर उसमें अजवाईन व कपूर डालकर किया जाना चाहिए क्योंकि बगैर कण्डे के अजवाईन में कपूर जलाकर किये जाने पर उसका प्रभाव अधिक समय तक नहीं रहता है।
16. जनकार्यक्रम में तेल के दीये के बजाय मोमबत्ती प्रज्वलित करना अधिक सरल व सुविधाजनक है। मोमबत्ती प्रायः छोटी ही ली जावे अन्यथा व्यर्थ जलने व व्यर्थ ही अधिक मोम पिघलता है।
17. मानव आकृति चार्ट को समझाने के लिए प्वाइंटर या पतली छड़ी हो तो लोगों पर प्रभाव डालती है। चार्ट समझाने के समय माईक हाथ में ही रहे तो अधिक सुविधाजनक रहेगा।
18. आत्म-साक्षात्कार करवाये जाने पर माईक स्टेण्ड पर लगा रहे तो अधिक सुविधाजनक होगा। जब तक नियत स्थान से माईक अन्यत्र ले जाने की जरूरत न हो तो स्टेण्ड पर ही लगा रहने दिया जाए।
19. वक्ता व आत्मसाक्षात्कार प्रक्रिया पूर्ण करने वाला सहजयोगी नियमित हो और उसे स्वयं को चैतन्य से चक्रों व नाड़ियों के दोषों को गुणों को अनुभूति कराने में सक्षम होना चाहिए अर्थात् उन्हें अनुभूति समझने व करवाने की समझ होना चाहिए।
20. आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया व्यक्तिगत रूप से समझाने का कार्य अन्य साथी सहजयोगियों व सहजयोगिनियों द्वारा जिज्ञासुओं के साथ किया जावे और जब आत्मसाक्षात्कार करवाना प्रारंभ कर दिया जाए तो उन्हें कोई, किसी जिज्ञासु को दुरुस्त करने का न कहें, न दुरुस्त करावें। वे जैसा भी कर रहे हों उन्हें करने दिया जाए। आत्म साक्षात्कार के समय जिज्ञासु जैसा भी करें वह सब श्रीमाताजी पर छोड़ देना चाहिए, क्योंकि उसके पहले हमने व हमारे साथियों ने काफी कुछ समझा दिया है फिर भी यदि आत्म साक्षात्कार के दौरान वह गलत तरीके से कर रहा है तो यह उसके व श्री माताजी के बीच की बात होगी। आत्म साक्षात्कार के बाद भी उक्त गलतियों को उन्हें नहीं बताएं बल्कि घर जाकर किस प्रकार ध्यान की क्रिया करना है वह बतलाई जाए।
21. आत्म साक्षात्कार हेतु चैतन्य की अनुभूति जिज्ञासुओं को संतुष्ट होने तक कई प्रकार से करवाई जाना चाहिए, जिससे उनकी विस्मय और विश्वास बढ़े और सहजयोग के प्रति आकर्षित होवें।

औषधियों का देवीय महत्व

ब्रह्माजी के दुर्गा कवच में उल्लेखित नौ विशिष्ट औषधियों में विराजित नवदुर्गा।

(1) प्रथम शैलपुत्री (हरड़) – कई प्रकार के रोगों में काम आने वाली औषधि हरड़ हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप है। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है। यह पथया, हरीतिका, अमृता, हेमवती, कायस्थ, चेतकी और श्रेयसी सात प्रकार की होती है।

(2) ब्रह्मचारिणी (ब्राह्मी) – ब्राह्मी आयु व याददाश्त बढ़ाकर, रक्तविकारों को दूर कर स्वर को मधुर बनाती है। इसलिए इसे सरस्वती भी कहा जाता है।

(3) चंद्रघंटा (चंदुसूर) – यह एक ऐसा पौधा है जो धनिए के समान है। यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है इसलिए इसे चर्महंती भी कहते हैं।

(4) कुष्मांडा (पेठा) – इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है। इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं। इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो रक्त विकार दूर कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रोगों में यह अमृत समान है।

(5) स्कंदमाता (अलसी) – देवी स्कंदमाता औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त व कफ रोगों की नाशक औषधि है।

(6) कात्यायनी (मोइया) – देवी कात्यायनी को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका व अम्बिका। इसके अलावा इन्हें मोइया भी कहते हैं। यह औषधि कफ, पित्त व गले के रोगों का नाश करती है।

(7) कालरात्रि (नागदौन) – यह देवी नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती हैं। यह सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी और मन एवं मस्तिष्क के विकारों को दूर करने वाली औषधि है।

(8) महागौरी (तुलसी) – तुलसी सात प्रकार की होती है सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरूता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र। ये रक्त को साफ कर ह्रदय रोगों का नाश करती है।

(9) सिद्धिदात्री (शतावरी) – दुर्गा का नौवाँ रूप सिद्धिदात्री है जिसे नारायणी शतावरी कहते हैं। यह बल, बुद्धि एवं विवेक के लिए उपयोगी है।

काले गेहूँ, चने व सोयाबीन के औषधीय प्रभाव

गेहूँ, चने और सोयाबीन की कुछ फसलें ऐसी हैं जो कई गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर व डायबिटिज से बचाव तो करती हैं, साथ ही रोग प्रतिरोधक व पाचन क्षमता को भी बढ़ाती हैं। इनमें जापान का काला और बैंगनी गेहूं, सोयाबीन और आस्ट्रेलिया का काला चना प्रमुख हैं। काला गेहूं मुख्य रूप से जापान के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद किया गया था। मोहाली पंजाब में स्थित राष्ट्रीय कृषि खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा जापान के काले व बैंगनी गेहूं को आयात कर भारतीय गेहूं से क्रॉस करवाकर नई किस्म तैयार की गई है। इसका नाम नाबीएमजी है। बाजार में यह काले और बैंगनी गेहू के नाम से प्रचलित है।

उज्जैन के किसान ने वर्तमान में अपनी दो बीघा जमीन में काला गेहूँ बोया है। इसमें से लगभग 20 से 25 क्विंटल की उपज होगी। जो लोग काले गेहूँ का महत्व और अहमियत जानते हैं वे उक्त किसान से सम्पर्क कर उनके खेत में पहुँचकर उनकी उपज खरीद लेते हैं। पिछले वर्ष काला गेहूँ लगभग 15 हजार रूपये क्विंटल के हिसाब से बेचा था। बीज भी किसान उपलब्ध कराते हैं। आधा/पौन बीघा जमीन में ऑस्ट्रेलिया के काले चने की फसल बोई है, जो पाचन शक्ति को बढ़ाता है। यह चना बाजार में सौ रूपये प्रतिकिलो के भाव से बिक रहा है।

सोयाबीन की ही एक अन्य उन्नत नस्ल भी बोई थी, जो एक सब्जी की तरह खाई जाती है। यह पौष्ठिक तत्वों से भरपूर है, साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाती है जो पिछले साल ये सोयाबीन 500 रू प्रतिकिलो के भाव से जापान तक में बिक्री के लिये गई थी। सहजयोग पद्धति से ये फसलें और भी अधिक उपयोगी हो सकती है। सहजयोग पद्धति का उपयोग करते हुए भी किसान प्रदर्शनी और राष्ट्रीय स्तर के किसान प्रदर्शनी और राष्ट्रीय स्तर के किसान सम्मेलनों में सहभागिता निभाना चाहिए। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर जारी सलाह को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए, क्योंकि कई बार उनकी सलाहों से भी जोखिम का अनुपात कम करने में मदद मिलती है।

रबी की फसलों की पाले से सुरक्षा :-

सर्दी के मौसम में कभी-कभी बारिश भी हो जाती है। आलु, प्याज, चना, गेहूँ जैसी रबी की फसलों को पाला से बचाने के लिए कृषि विभाग व कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार शाम के समय जब आसमान साफ हो या फिर हवा नहीं चले तो ये समझ लिया जाये कि रात को पाला अवश्य पड़ेगा, ऐसी स्थिति में किसान फसल में हल्की सिंचाई जरूर करेगा। खेत के उत्तर व पश्चिम दिशा की मेड़ों पर धुआँ करते रहें।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पाले से बचाव के लिए जैविक उपाय भी कारगर होते हैं। यदि किसान अपने खेत में 500 मि.ली. ताजा गौ-मूत्र या 500 मि.ली. गाय के दुध में 15 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें तो भी पाले से फसल की सुरक्षा हो सकती है। यदि पाले से स्थाई समाधान चाहते हैं तो किसान को चाहिए कि वे उत्तर पश्चिम दिशा में हवा को रोकने के लिए वृक्षों की बाढ़ तैयार करें उससे पाले का प्रभाव कम हो सकता है। अन्य जगहों पर भी किसान ऐसी फसलों का उत्पादन कर रहे हैं। सहजयोग की तकनीक फसलों के लिए सोने में सुहागा है।

घर की छत पर उगाएँ सब्जियाँ

भोजन की थाली में बढ़ते जहरीले प्रभाव से काफी लोग अनजान हैं, परंतु इनके कुप्रभाव से कोई भी अछूते नहीं हैं। आजकल बाजार और मण्डी में मिलने वाली सब्जियाँ एवं फल विभिन्न प्रकार के कृषि रसायनों के दुष्प्रभाव से ग्रसित हैं, जो मानव सेहत के साथ-साथ वातावरण के लिए भी खतरनाक बनते जा रहे हैं। फसलों पर कीटों एवं बीमारियों के प्रभारी प्रकोप को देखते हुए किसान रसायनों की आवश्यक मात्रा से अधिक इस्तेमाल करते हैं। इसके अतिरिक्त मंडियों में व्यापारी के स्तर पर भी फल एवं सब्जियों पर कृषि रसायनों का उपयोग आम बात होती जा रही है, जिसकी वजह से जहर की अधिक मात्रा मानव देह में प्रवेश पा रही है। आजकल बाजार में फलों एवं सब्जियों में अच्छा रंग विकसित करने के लिए इन्हें कृषि रसायनों के घोल में डुबोया जाता है जैसे फूल गोभी के फूल में चमक लाने के लिए मेलाथियॉन, बैंगन में कार्बोफयूरान, आम को पकाने के लिए प्रतिबंधित दवा कैल्शियम कार्बोइड आदि। इसी तरह बेमौसम में मिलने वाली सब्जियों में अतिरिक्त कृषि रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है जो काफी हानिकारक सिद्ध हो रहा है। सब्जी उगाने वाले किसान और व्यापारी दवा बेचने वाले लोगों से सलाह लेकर मनमाने ढंग से कीटनाशक रसायनों का इस्तेमाल करते हैं तथा इनके तुरंत बाद फल एवं सब्जियों की तुड़ाई कर बाजार में बेच देते हैं। उनको इसके प्रभावों की जानकारी नहीं होती है इसलिए बहुत आवश्यक है कि उत्पादक, उपभोक्ता एवं व्यापारी इन रसायनों के प्रभावों को अच्छी तरह से सोच समझकर इस्तेमाल करें।

कृषि रसायनों के अन्धाधुंध प्रयोग का सबसे बुरा प्रभाव मानव को सहन करना पड़ रहा है। खान-पान में प्रयोग होने वाले फलों, सब्जियों एवं अनाजों के रसायनों से दूषित होने के कारण मनुष्यों की उम्र लगातार घटती जा रही है। इनके अलावा अनेक प्रकार की नई-नई बीमारियों का प्रकोप भी बढ़ता जा रहा है। आज कृषि रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से लोगों में कैंसर, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, एन्जाइम असंतुलन, चर्म रोग, रक्त एलर्जी, श्वसन संबंधित बीमारियाँ, याददाश्त में कमी आना, अधिक गुस्सा आना, मानसिक संतुलन खोना जैसी समस्याएँ लगातार बढ़ रही हैं। ऐसी स्थिति में सप्ताह में 2-3 बार अगर जैविक सब्जियाँ प्राप्त हो जाएँ तो इन रसायनों की ग्रहण मात्रा भी कम होगी तथा ग्रहण किए गए रसायनों का दुष्प्रभाव भी कम होगा। बड़े शहरों, कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत लोग ऐसे हैं जिनके पास सब्जियों के उत्पादन के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध नहीं है। इन परिस्थितियों में मकान की छत, छज्जों एवं मकान के चारों ओर की खाली जगह में जैविक विधि से कुछ मात्रा में सब्जियों का उत्पादन किया जा सकता है। विशेष रूप से छत का क्षेत्र काफी बड़ा एवं खुला होता है, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी पर्याप्त मात्रा में पहुँचता रहता है। छत पर सब्जियाँ विशेष प्रकार के गमलों, नालियाँ एवं जड़ माध्यम पात्रों में उगाई जा सकती है। छत पर मुख्य रूप से बेल वाली सब्जियाँ (जैसे - लोकी, तोरई, टिण्डा, करेला) भिण्डी, बैंगन, टमाटर, मटर, ग्वारफली, चँवला फली, पालक, मैथी, गोभी, मूली एवं गाजर उगाई जा सकती है। इस प्रकार सब्जियों के उत्पादन से घर के सदस्यों को कुछ काम भी मिलेगा और घर का वातावरण हरा-भरा रहेगा तथा बच्चों को पेड़-पौधों के विषय में जानकारी भी प्राप्त होगी।

सब्जियों के लिए गमले एवं नालियाँ : छत एवं घर-आँगन में सब्जी उत्पादन के लिए गमले मिट्टी, सीमेंट एवं प्लास्टिक के हो सकते हैं। गमलों की भराव क्षमता लगभग 10 किलो ग्राम से लेकर 250 किलो ग्राम तक होनी चाहिए, जिससे आवश्यकता के अनुसार उपयोग किया जा सके। गमलों की गहराई फसल के अनुसार 1.0 से 2.5 फीट तक सामान्यतया होनी चाहिए। सब्जी उत्पादंन के लिए सीमेंट की नालियों का उपयोग भी किया जाता है।

सहजयोग कृषि प्रयोग

श्रीमाताजी ने बतलाया कि वाईब्रेशन (चैतन्य लहरियाँ/स्पन्द) एक जीवन्त प्रकिया है, जो सोचती है और कार्य करती है, जिस प्रकार लोहे का चुम्बक पर प्रभाव होता है, उसी प्रकार यह कार्य करती है। इन चैतन्य लहरियों का प्रभाव जीवन्त चीजो पर क्रमशः पानी, वनस्पति, वातावरण के साथ -2 मानव के उत्थान पर भी पडता है। विश्व के विभिन्न देशों में सहज कृषि पर अनुसंधान कार्य किये गये, उनके उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले हैं। साधारण पानी को श्रीमाताजी के फोटो के समक्ष रखा गया, परिणामस्वरूप आणविक संरचना, आक्सीजन एवं हाईड्रोजन बोन्डेज में परिवर्तन देखा गया। एवं घुलनशील क्षमता में सुधार देखा गया, इस चैतन्य पानी का प्रयोग फसलों, मानव एवं अन्य जीवन्त चीजों में करने से सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं।

सहज कृषि तकनीक मे सर्वप्रथम उन्नत बीज एवं पानी को श्रीमाताजी के समक्ष रखकर चैतन्यमय किया जाता है तो इसमे बीज के भूण्र (एम्बीरियो) जाग्रत हो जाता है तथा इन बीजो के बोने से साधारण बीज में 2-3 दिन जल्दी अकुंरण के साथ बीज का विकास तेजी से होता है। पिकअप ग्रोथ (पौधो की बढ़वार) अच्छी होने से फसल की बढ़वार में आशातीत वृद्धि देखी गई है, सिंचाई में चैतन्यमय पानी के उपयोग से वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर करीबन 10-15 प्रतिशत तक वृद्धि देखी गई है। श्रीमाताजी के चैतन्य लहरियों का प्रयोग कृषि, बागवानी, पशुपालन के क्षेत्रों एवं अन्य जीवन्त चीजों में करके उत्साहवर्धक सकारात्मक परिणाम देखने को मिले है।

सहजी कृषक श्री प्रकाश पटेल निवासी सिरसी (मनावर) जिला - धार, म.प्र. (मो. 9617262117) ने सहज योग मे जनवरी 2015 से श्रीमती निर्मला देवी से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। सहज कृषि करने की प्रेरणा मुझे श्रीमाताजी की कृपा से सहजी डॉ. कैलाश महाजन मो. 9424585696 खरगोन को माध्यम बनाकर मुझ तक पहुचाँई। गत 5 वर्ष से श्री पटेल (पाटीदार) श्रीमाताजी निर्मला देवी द्वारा प्रसारित चैतन्य (वाईब्रेशन) का अपने 40 बीघा खेत में उपयोग कर रहे है। सहज कृषि तकनीक मे गत 5 वर्षों से चना, कपास एवं गेहुँ में चैतन्यमय बीज एवं पानी का प्रयोग कर रहे हैं। हर वर्ष खेत के चारो कोनो पर नारियल एवं एक नारियल खेत के बीच में खड्ढा कर गणेश अथर्वशीष करते हुए स्थापित कर रहा हूँ, जिससे चैतन्य बना हुआ है।

शुरू में सहजयोग में जुड़ने के बाद खेत में कुआ खोदने के लिए श्रीमाताजी से अनुमति लेकर कार्य शुरू किया तथा वहाँ बैठकर वाईब्रेशन लिये तथा कार्य शुरू किया। श्रीमाताजी की कृपा से 40 बीघा जमीन के लिए पर्याप्त पानी मुझे मिल गया, अब मोटर बन्द करनी पड़ती है।

कृपया इस आलेख को पढकर भारत के विभिन्न राज्यों में हो रहे सहजी कृषि कार्य का विस्तृत विवरण एवं परिणाम श्री जी.डी. पारीक, जयपुर (राज.) के मोब. 9828451514 या ईमेल - gdparkeek@yahoo.com पर भिजवाये ताकि सभी सहजी भाई-बहिनों का सहज कृषि तकनीक अपनाने में लाभान्वित किया जा सके।

(श्री प्रकाश पटेल, सिरसी (मनावर), जिला-धार, मप्र)

कृषि विज्ञान केंद्र में सहज कृषि

Est.Date- 28/11/2011

Shri. Marutrao Ghule Patil Shikshan Sanstha's

KRISHI VIGYAN KENDRA DAHIGAON-NE

Ahmednagar

SMGPSS

At Post- Dahigaon-Ne, Tal-Shevgaon, Dist-Ahmednagar (MS) India- 414502 Office- 02429-272020, 272030
Website :kvkdahigaon.org E-mail: kvkdahigaon@gmail.com

Out Word No. KVKD/office/3-1.7/2020-21/25 Date :10/07/2020

To,
Mr. Dinesh Rai Ji (Vice Chairman),
H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Sahajayoga National Trust,
Delhi.

Subject: Granting permission for conducting Sahaj Krishi Trials at KVK's Instructional Farm

Dear Sir,

With reference to your letter dated 25/06/2020 regarding conducting trials of Sahaj Krishi Techniques on any short duration crop at our Krishi Vigyan Kendra; here we are permitting you to apply Sahaj Krishi Techniques on Guar crop.

You may start Sahaj Krishi Techniques from sowing to till harvesting in guar crop and in Soybean, Pigeon pea, Green gram which is already sown, after sowing Sahaj Krishi technique can be applied.

Trials will be conducted in collaboration of Sahaj Krishi Team and Krishi Vigyan Kendra and accordingly observations will be recorded.

I wish all the very best for organizing Sahaj Krishi Technique trials to National Sahaj Krishi team members Mr. Mahesh Avhad, Mr. Chandrasekhar Sonawane, Mr. Narayan Nibe, Mr. Namdeo Rahane and Mr. Balasaheb Shewale.

Thanking You.

10/07/20
Dr. S. S. Kaushik
Sr. Scientist and Head

नेशनल ट्रस्ट और श्री दिनेश रायजी (वाइस चेयरमैन नेशनल ट्रस्ट), श्री जयकरणजी चौधरी (कन्वेनर NSYS) के समर्थन से परम् पूज्य श्री माताजी निर्मलादेवीजी की असीम कृपा में कृषि विज्ञान केन्द्र - दहीगाँव - अहमदनगर, जो कि आई.सी.ए.आर. अनुसंधान केन्द्र - दिल्ली की निगरानी और उनके साथ कृषि कार्य करता है, सहज कृषि को दर्शाने और सहज कृषि के माध्यम से वहां पर ग्वार, सोयाबीन, मूंग, तुवर आदि जैसे फसलों के ऊपर परीक्षण करने का मौका मिला है। बुनियादी सहज कृषि विधि की जानकारी दी गई। उनके द्वारा परीक्षण का निरीक्षण भी किया गया। अनुमति पत्र सम्मुख में देखें।

सहज खेती से उत्पादन बढ़ता है, लागत नहीं बढ़ती

उत्तरप्रदेश का जो हिस्सा नेपाल की तराई से लगा है, वहां चावल की एक बहुत ही स्वादिष्ट और सुगंधित प्रजाति 'काला नमक' की उपज होती है। सिद्धार्थ नगर से लेकर महाराजगंज तक और बहराइच के आसपास भी यह चावल पैदा किया जाता था। लेकिन अब कुछ वजहों से यहां के किसान पाकिस्तानी बासमती किस्म के चावल की ओर भाग रहे हैं। काला नमक चावल के बारे में यह माना जाता है कि अगर यह किसी घर में पक रहा हो, तो आसपास के बहुत से घरों तक इसकी सुगंध पहुंच जाती है। स्वाद भी बहुत अलग है। लेकिन अभी जानकारी मिली कि महाराजगंज के आसपास के बड़े किसान जो काला नमक चावल पैदा करके बाजार में देते हैं, वे दो तरह की खेती करते है।

अपने घर-परिवार के लिए जो अनाज पैदा करते हैं, उसमें वे न तो कोई रासायनिक उर्वरक डालते हैं और न ही उस पर किसी रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव करते हैं। वे अपने घर-परिवार के लिए जैविक, यानी ऑर्गेनिक खेती पर जोर देने लगे हैं। यानी अपने लिए अलग उपज और बाजार के लिए अलग। यह बहुत महत्वपूर्ण बदलाव शुरू हो रहा है खेती और खान-पान में।

रासायनिक उर्वरक के अंधाधुंध इस्तेमाल के चलते खेत की जमीन खराब हुई, तो वहां का भूजल भी प्रदूषित हुआ। कभी हरित क्रांति का ध्वजवाहक रहा यह राज्य अब कैंसर जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। रासायनिक खेती और कैंसर का रिश्ता अभी भले ही अंतिम रूप से साबित न हुआ हो, लेकिन कैंसर के सबसे ज्यादा प्रभावित लोग पंजाब में है। इस लिहाज से तराई क्षेत्र में जो हो रहा है, वह काफी महत्वपूर्ण है। बहुत से किसान अब रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल छोड़ने लगे हैं। ऐसे किसानों की संख्या अभी भले ही कम है, लेकिन शुरूआत बहुत महत्वपूर्ण है।

इसमें केंद्र सरकार ने रासायनिक उर्वरक की जगह जैविक खाद और कीटनाशक बड़े पैमाने पर किसानों को मुहैया कराना शुरू कर किया। राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र के वैज्ञानिकों ने जो कचरा अपघटक, यानि वेस्ट डीकंपोजर बनाया, वह किसानों में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। इससे कोई भी किसान पच्चीस-पचास एकड़ खेती के लिए जैविक खाद और कीटनाशक खुद बना सकता है। इसे बनाने की एक शीशी सिर्फ 20 रूपये में जैविक खेती केंद्र किसानों को देता था, लेकिन अब यह काम निजी क्षेत्र को सौंप दिया गया है।

इस अभियान का नतीजा है कि मध्यप्रदेश , तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र और पूर्वोत्तर के कई राज्यों में जैविक खेती का रकबा बढ़ रहा है।

शेष अगले पृष्ठ पर...

पत्तागोभी भी काफी बड़ी साइज की आने लगी

कृषक का नाम : नरेश कुमार साहू
पता : ग्राम पारोलिया, तहसील छबड़ा, जिला बाराँ (राजस्थान)
व्यवसाय : कृषि एवं पशुपालन
आयु : 36 वर्ष
खेती : 3 बीघा
फसल : गेहूँ एवं अन्य सब्जियाँ
मोबाइल नं.: 90792-38021
सहजयोग में आरंभ : वर्ष 2016 से

जय श्री माताजी, मैंनें सन् 2016 में श्रीमान रामदयाल जी से जो कि छबड़ा, बारां (राजस्थान) के निवासी है, सहजयोग के बारे में समझा और वहीं पर आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद से ही मेरी सभी गलत आदतें (तम्बाकू , धुम्रपान, व्यसन इत्यादि) श्री माताजी की असीम कृपा से छूट गई। उसके बाद आज तक मैंने इनको हाथ नहीं लगाया। मेरा पूरा परिवार, मेरे अन्दर हुए इस आश्चर्यजनक परिवर्तन को देखकर सहजयोग में जुड़ गया। धीरे-धीरे मुझे सहज कृषि के विषय में पता चला तो मैं भी सहज कृषि करने लगा। सहज कृषि से पहले मुझे गेहूँ की फसल प्रति बीघा 8 से 9 विक्टल हुआ करती थी परन्तु सहज पद्धति से वही फसल बढ़कर 14 से 15 क्विंटल तक पहुँच गई है। इससे प्रेरित होकर मैंने सब्जियों की खेती भी शुरू की तो मेरे खेत में पत्तागोभी भी काफी बड़ी साइज की आने लगी, जिसे देखकर आस-पास के किसान भी देखकर आश्चर्य चकित रह गये। अब मेरा पूरा जीवन सहजयोग में ही समर्पित है।

सहज तरीके से आलू, बैंगन की फसल दोगुनी हो गई

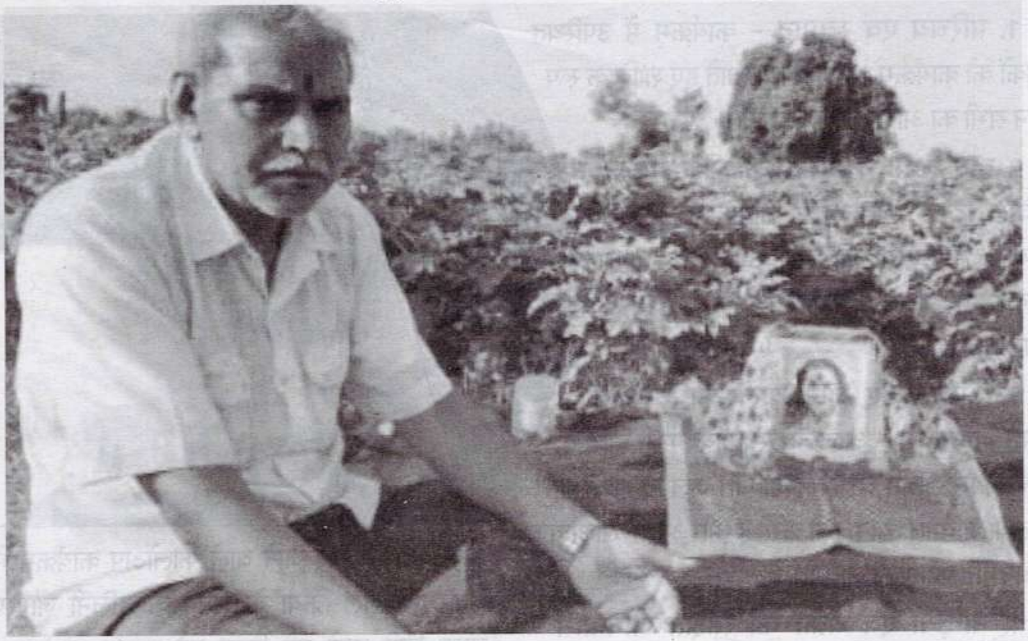

कृषक का नाम : छोटूलाल सुमन, पता : ग्राम अर्जुनपुरा, तहसील लाडपुरा, जिला कोटा (राजस्थान) व्यवसाय : कृषि एवं पशुपालन, आयु : 60 वर्ष, खेती : 4 बीघा, फसल : आलू , बैगन, चावल एवं अन्य सब्जियाँ। मोबाइल नं. : 91166-04049

सहजयोग में आरंभ : वर्ष 2018 से जय श्री माताजी, वर्ष 2018 में कोटा के सहजयोगी गाँव में आकर ध्यान एवं आत्मसाक्षात्कार का कार्यक्रम करने लगे वहाँ पर मैंने सर्वप्रथम आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया और धीरे-धीरे ध्यान की तरफ मेरी रूचि बढ़ती चली गई। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के उपरान्त मेरे अन्दर काफी परिवर्तन होने लगे। सहजयोग में आने से पूर्व मैं और मेरी पत्नी हर महीने डॉक्टर के पास जाते रहते थे। मुझे Prostate की समस्या थी एवं मेरी पत्नी का भी B.P. एवं Sugar की समस्या थी जो अब धीरे-धीरे ठीक होने लगी। अब हम किसी भी डॉक्टर के पास नहीं जाते और श्री माता जी की कृपा से हम स्वस्थ रहते हैं।

इसी बीच कोटा के सहजयोगी भाईयों ने मुझे सहज कृषि के बारे में जानकारी दी तो मैंने भी पूर्ण उत्साह से सहजकृषि करने की ठान ली। मैंने सहज पद्धति से 2018 में पहली बार खेती की। सर्वप्रथम मैंने मेरे 4 बीघा खेत में आलू की फसल करी तो मैंने देखा पहले 4 बीघा खेत में आलू 200 से 250 क्विंटल होते थे परन्तु श्री माताजी की कृपा से इस वर्ष 400 क्विंटल तक पैदावार पहुँच गई और आलू की साइज भी काफी बड़ी है, जिसे देखकर पूरा गाँव हतप्रभ रह गया। मेरा उत्साह और बढ़ा, मैंने 2018 में 4 बीधा खेत में बैगन की फसल की। बैगन की फसल इतनी अधिक हुई कि हमारा पूरा परिवार मिलकर भी एक दिन में पूरे बैंगन नही तोड पाता था। हर साल उस खेती से हम 1 से 2 लाख रूपये की आमदनी प्राप्त करते थे। परन्तु इस वर्ष हमने इस फसल से 5 लाख रूपये प्राप्त किये। मैं अपनी सभी भाई-बहिनों से यही कहना चाहता हूँ कि माँ कि कृपा को पूरे विश्व में फैलायें। सहज योग और सहज कृषि को बढ़ावें।

!! जय श्री माताजी !!

रसायन के बजाय चैतन्यित पानी का छिड़काव

'सर्वशक्तिमान परमात्मा ही सारा जीवन्त कार्य करते हैं, आप तो एक बीज भी अंकुरित नहीं कर सकते। अंकुरित करने के लिए बीज को पृथ्वी माँ में डालना पड़ेगा।' परन्तु **श्रीमाताजी बीजों को अंकुरित कर सकती हैं और मृत्युन्मुख फूलों को पुनर्जीवित कर सकती हैं।** वर्ष 1991 में उनकी उड़ान सिड़नी बहुत देर से पहुंची और उनका स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा करते हुए सैकड़ों योगियों से पुष्प वे स्वीकार न कर सकीं। अगली प्रातः उन्होंने किसी को फूल लाने के लिए भेजा परन्तु फूल तो मुरझा चुके थे। अपने स्नान की टब में उन्होंने फूलों को डाल दिया और पानी को चैतन्यित किया। शाम तक सारे फूल इस प्रकार ताजे और खिले हुए थे मानों उन्हें अभी तोड़ा गया हो। सभी जीवों के विकास को वे अपने परानुकम्पी नाड़ी-तंत्र पर महसूस करती हैं... 'ग्लोडियोलि फूलों की शक्ति का बहुत अधिक ह्रास हो रहा है, अच्छा होगा कि इनकी कलियों को खोल दो, इन गुलाब के फूलों को धूप की बहुत आवश्यकता है, यह पौधा मर रहा है, इसकी चैतन्य लहरियों को बढ़ा दो...' **मानव से कहीं अधिक पौधे और पशु उनकी चैतन्य लहरियों के प्रति संवेदनशील हैं, संभवतः इसलिए क्योंकि उनमें अहम् नहीं है।** उन्होंने पुणे में एक अनुसंधान फार्म की स्थापना की। चैतन्य लहरियों से सूर्यमुखी एक फुट व्यास से भी बड़ा हो गया और कृषि विभाग की रुचि सहजयोग विधियों में बन गई। महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें अमिश्रित बीज पैदा करने के लिए सहजयोग विधियों पर प्रयोग करने को नीरा नरसिंहपुर में भूमि प्रदान की। मिश्रित बीज प्रारंभ में अधिक उपज तो दे सकते हैं, परंतु गरीब किसानों के लिए ये अत्याधिक महंगे हैं और इनमें विषाणुओं से मुकाबला करने की शक्ति भी बहुत कम है। इन पर बहुत बड़ी मात्रा में रासायनिक छिड़काव की आवश्यकता होती है जिस पर बहुत धन खर्च होता है।

चैतन्यित पानी में भिगोकर श्रीमाताजी अमिश्रित बीजों की शक्ति को विस्मयकारी ढंग से बढ़ा देती हैं। **विश्व स्वास्थ्य संस्था (डब्ल्यूएचओ) के एक ऑस्ट्रेलियायी वैज्ञानिक ने इस विधि को अपनाया और उसके शोध ने दर्शाया कि चैतन्यित पानी से सींचे गए खेतों में साधारण पानी से सींचे गए खेतों की अपेक्षा दुगुनी उपज हुई है।** चैतन्य लहरियां देने से देशी गायों के दूध की मात्रा में भी सुधार हुआ। यह पाया गया कि **भारतीय गायों के चैतन्यित दूध के गुण विदेशी किस्मों के दूध से कहीं उच्च थे।** सन् 1982 में महाराष्ट्र के लिए हरे पेड़ बनाने के लिए राहुरी कृषि विश्वविद्यालय ने एक विशेष अनुदान दिया। रूस के कृषि वैज्ञानिकों को चैतन्य लहरियों द्वारा अपनी कृषि को सुधारने की विधियों का भी श्रीमाताजी ने परामर्श दिया है। श्रीमाताजी फूलों से प्रेम करती हैं और विश्वभर से पौधे लायी हैं। **पहली बार सन् 1993 में उन्होंने पुणे में बल्ब के आकार की कुमुदिनी (ट्यूलिप्स) उपजायी और उनके खेत के गुलाब के फूलों ने पुष्प प्रदर्शनियों में बहुत से ईनाम जीते हैं।** बंगलौर में चैतन्य लहरियों के माध्यम से ऊतक संवर्धन प्रक्रिया में क्रांति लायी गई है। **किसानों को आत्मसाक्षात्कार द्वारा आनंद और वैभव प्रदान कर, सहजयोग विधियां, कृषि के क्षेत्र में मूक क्रांति ला रही हैं।**

हमेशा डेढ़ बीघा गलने वाली फसल भरपूर हुई

कृषक का नाम : बनवारी लाल
पता : ग्राम इकलेरा, जिला बारां (राजस्थान)
व्यवसाय : कृषि एवं पशुपालन
आयु : 35 वर्ष
खेती : 4 बीघा
फसल : सोयाबीन, लहसुन
मोबाइल नं. : 99283-92412
सहजयोग में आरंभ : वर्ष 2017 से

जय श्री माताजी, वर्ष 2017 में सहजयोग में ध्यान एवं सहज कृषि की शुरूआत की। मेरी बेटी स्कूल जाती थी, वहां पर अध्यापक श्री विष्णुजी शर्मा ने मेरे बेटियों को सहजयोग के बारे में जानकारी दी। उसके अंदर परिवर्तन देखकर हम भी सहजयोग को समझने लगे। तभी वहां के कुछ सहजयोगियों ने मेरे खेत पर सहज-कृषि करने की इच्छा प्रकट करी। मैं बहुत खुश हुआ, मैंने उत्साह से इस वर्ष सहज पद्धति से कृषि करने की ठान ली।

हमने सहजयोग पद्धति से माँ की कृपा से मेरे खेत पर नारियल स्थापित किया एवं बारां के सहजयोगी भाई एवं बहन हर सप्ताह (शुक्रवार) को ध्यान करने आने लगे। मैंने उस 4 बीघा खेत पर सोयाबीन की फसल बोई थी। मैंने देखा कि उस खेत में पहले हर साल डेढ़ बीघा की फसल गल जाया करती थी और मात्र ढाई की फसल ही बच पाती थी। परंतु इस वर्ष बड़े ही आश्चर्य की बात रही कि मैंने पूरे 4 बीघा में सोयाबीन की फसल प्राप्त करी। ये सब श्री माताजी की कृपा थी। फिर मैंने लहसुन की फसल करने की ठानी, परंतु बारां के सहजयोगियों ने मुझे लहसुन की फसल करने की मना कर दी। उन्होंने इस बात को वाइब्रेशन के आधार पर कहा था, परंतु मैंने उनकी बात नहीं मानी और मैंने लहसुन की ही फसल करी। बारां से आने वाले सहजयोगी भाई-बहन फिर भी हर सप्ताह मेरे यहां ध्यान करने आते थे। मैं और मेरा परिवार भी ध्यान करने लग गया और प्रसन्न रहने लगा।

लहसुन की फसल तो अच्छी हुई परंतु उस वर्ष लहसुन के भाव जमीन पर आ गिरे, जिससे मुझे काफी नुकसान सहना पड़ा। तब से मैं समझ गया कि माँ की बात नहीं मानने से ही ऐसा हुआ है।

चैतन्यित मिट्टी से नकारात्मकता खत्म हो जाती है

पश्चिमी सहजयोगियों का पूजा में जाने का प्रोग्राम था। हर वर्ष पूजा के सहजयोगी उन्हें भिन्न-भिन्न उपहार दिया करते थे। उन्होंने श्री माताजी से उपहार देने के बारे में राय मांगी। पिछले वर्ष उन्होंने अगरबत्ती होल्डर की राय दी थी। इस वर्ष उन्होंने महाराष्ट्र की चैतन्यित मिट्टी देने की राय दी।

उनकी राय के अनुसार हर एक को वही मिट्टी छोटी सुंदर डिब्बी में खूबसूरती से रख कर दी। ऑस्ट्रेलिया के को-आर्डिनेटर ने उन पैकेट्स को शिप से ऑस्ट्रेलिया भेजने का फैसला किया। जब यह बात परम पूज्य श्री माँ को पता लगी तब उन्होंने प्रश्न किया - अगर मैं तुम्हें चांदी का सिक्का देती, तब क्या तुम उसे जहाज से अपने घर भेजते?

उन्होंने बताया कि किस तरह दिमाग तोहफों की कीमत को तोलता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने तोहफे में उन्हें यह मिट्टी इसलिए देने की राय दी ताकि वह उसमें पौधा उगा सकें, और यह सब तरफ चैतन्य फैलाये। सबसे ज्यादा कीमती ऊर्जा, जीवन्त ऊर्जा है, जब वह बढ़ती है तब रुकी हुई नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर देती है। मैं स्वयं उन लोगों की भलाई की ज्यादा परवाह करती हूं जो कि मेरी साधना पूरे चित्त से करते हैं। जो कोई सबसे ज्यादा साधना करेगा (भले ही वह हारता रहे) उनके पास जो है वह मैं बढ़ा दूंगी और मैं वह भी दूंगी, जो उनके पास नहीं है।

(1982 - लोनावाला सेमीनार)

चैतन्यमयी खेती से फसल साफ-सुथरी, सुगंधित आती है

हमारा जन्म ही किसान के घर हुआ। पढ़ाई के कारण गांव के बाहर जाना पड़ा। मेरी मां ने बचपन से ही आध्यात्मिक संस्कार दिये थे। इसलिए पढ़ाई के बहाने जो भी शहर जाना हो तो मैं ध्यान के मार्ग खोज लेता था। बंबई में एक दिन सहजयोग का पर्चा घर में आया। उसी दिन का सेंटर था। मैं अकेला ही सेंटर गया और श्री माताजी की कृपा से आत्म-साक्षात्कार हो गया। वो समय 1986 का था। कुछ कारणवश पढ़ाई छोड़कर गांव आना पड़ा। बंबई के सहजयोगियों ने बहुत सारा सहजयोग का प्रचार साहित्य साथ में दिया। गांव आकर कुछ ही दिनों में पास के गांव में सहजयोग का प्रचार हुआ और बहुत सारे सेंटर हो गए। कुछ दिनों बाद बंबई जाना हुआ। हम सहजयोगियों से मिलने गए। **सहजयोगियों के मुंह से निकल गया - भैया आप बहुत लक्की हैं। आज बाम्बे आ गए। आज मां अमेरिका जा रही हैं। मां के दर्शन करने हमारे साथ एयरपोर्ट चलेंगे। रात में दस बजे हम एयरपोर्ट गए। मां के दर्शन हो गए। गांव का प्रचार और सेंटर के बारे में श्री मां ने पूछा और कुछ यादें उजागर की और पीठ पर हाथ रखकर श्री मां ने भरपूर आशीर्वाद दिया।**

मां का आशीर्वाद मिलने के बाद हम गांव आ गए। खेती करने लगे। खेती में नॉलेज की कमी थी। बंबई के सहजयोगी चैतन्यमय खेती करने के लिए खत द्वारा माहिती भेजते थे। एक साल सोयाबीन फसल निकालने का समय आ गया। **उसी टाईम पर हमने हार्वेस्टर द्वारा सोयाबीन फसल निकालकर उसी दिन मार्केट में बेच दी और शाम को ही इतनी बारिश शुरू हुई कि सब गांव की और आजू-बाजू के गांव की सोयाबीन फसल बारिश से खराब हो गई। सब गांव के लोगों के मुंह से निकल पड़ा कि उनको देवी मां निर्माला माताजी का आशीर्वाद है। सब गांव को मालूम था हम खेतों में जाकर ध्यान करते थे, फसल को वाइब्रेशन (परम चैतन्य) देना, बोनी वक्त खेती की पूजा करके वाइब्रेटेड जल का छिड़काव करना इत्यादि सब गांव के लोग देखते थे और उनको मालूम हो गया कि सहजयोग खेती का तरीका क्या है। धीरे-धीरे किसान लोग सहजयोग करने लगे और परम चैतन्य का उपयोग करने लगे।** यह बात नब्बे की दशक की है।

बीते सालों से मेरा यही दिनक्रम चल रहा है। खेती में नारियल का प्रयोग, बीज को वाइब्रेट करके बोना, फसल के ऊपर वाइब्रेटेड जल का छिड़काव और खेतों में जाकर श्री गणेश अथर्वशीर्ष बोलकर ध्यान करना हाथों से फसल को वाइब्रेशन देना **इन क्रियाओं से फसल बहुत अच्छी, साफसुथरी और सुगंधमय आती है और फसल को देखकर सभी किसान आश्चर्यचकित हो जाते हैं और सहजयोग ध्यान करने लगते हैं। गांव में प्रचार का यही एक बड़ा फार्मूला है। अगर आपको खेत मं कोई बोरिंग करना है तो वाइब्रेशन के तरीके से आप पानी का पता लगा सकते हैं कि कहां पानी मिलेगा। मैंने हमारे खेत में यही तरीके से बोरिंग किया और बहुत जल मिला। हमारे साथ बहुत सहजयोगी किसान ने वाइब्रेशन तरीके से अपने खेती जल का शोध किया और उसी को यश मिल गया।**

हमारे पास 11 बीघा खेती है, लेकिन इतने खेती में श्री मां की कृपा से बहुत ही प्रगति हो गई। इतने सालों से मैंने देखा है कि अगर किसान लोग सहजयोग ध्यान करके परम् चैतन्य का उपयोग खेती में करेंगे तो उन्हें बहुत ही मुनाफा होगा और खेती के बारे में आज जो अस्थिति है वो दूर होकर सब चैन-खुशहाली होगी। जय श्री माताजी

कृषि

बीजों की बुआई विधि

यह सुनिश्चित करने के लिए कि परम चैतन्य की जागरूकता प्रतिदिन नियमित होती जा रही है। यथासंभव लंबे समय तक समुदाय में रहने का प्रयास करें।

सामग्री : 5 नारियल, गुलाब जल, कपूर, हल्दी कुमकुम, अक्षदा, फूल, अगरबत्ती, पानी, बीज उर्वरक, खेत की मिट्टी (धुएं या पेड़ के पास) श्री माताजी की पूजा करने के लिए। श्री कलश की पूजा करना। अभिषेक के लिए श्री माताजी के पास खेत में नारियल, बीज, मिट्टी और जल रखना।

आह्वान – प्रणाम, बंधन, संतुलन, महामंत्र, श्री गणेश मंत्र, श्री गणेश अथर्वशीर्ष, ध्यान करने के बाद निम्न मन्त्र लें- श्री. गणेश मंत्र, श्री, आदिभूमि देवता साक्षात मंत्र। श्री शाकंभरी देवता साक्षात मंत्र- श्री ऋतंभरा प्रज्ञा देवता साक्षात मंत्र। श्री जल देवता साक्षात मंत्र। श्री पंचमहाभूत देवता साक्षात मंत्र। प्रार्थना- श्री माताजी, आप वास्तव में श्री आदिशक्ति हैं। आप कुलदेवता हैं, आप कर्ता हैं, आप ही श्री गणेश हैं अब ही श्री हनुमान हैं। आप श्री आदिभूमि देवता हैं, आप शाकंभरी देवता हैं। आप ऋतंभरा प्रज्ञा देवता हैं। कृपया हमें अपने बन्धन में रखें।

पूजा

श्री गणेश और श्री हनुमान के रूप में इस पूरे खेत की रक्षा करें और इस खेत के सभी दोषों और नकारात्मकता को नष्ट करने की कृपा करें। हम श्री माताजी से नम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं कि श्री चरणी को अर्पित किया गया समस्त जल, नारियल, बीज, उर्वरक, मिट्टी उनकी परम कृपा से सजीव हो जाए। जमीन के पूरे वर्ग के चारों कोनों में 1 से 1.5 (डेढ़) फुट की खुदाई करें। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्य क्षेत्रों को लेना। उक्त मंत्र जाप करते हुए कपूर जलाकर कपूर जलाकर गड्ढे में नारियल डाल दें और उसमें जगमगाता जल, फूल, हल्दी कुमकुम डालकर प्रणाम करें। फिर गड्ढा भरकर गड्ढे में अगरबत्ती लगाएं। उसके बाद श्री गणेश अथर्वशीर्ष का निरंतर पाठ करें। ऐसा करने में पहले पूर्व दिशा में गड्ढे की पूजा करें, फिर दक्षिण दिशा में गड्ढे की पूजा करें, फिर पश्चिम दिशा में गड्ढे की पूजा करें, उत्तर दिशा में गड्ढे की पूजा करें और अंत में बीच में गड्ढे की पूजा करें। उपरोक्त सभी क्रियाकलापों को सभी गड्ढों में करने के बाद, कुछ समय ध्यान करें और श्री माताजी से प्रार्थना करें- हमारे द्वारा सहज कृषि विधि करने के लिए हम आपके बहुत आभारी हैं। जब हम श्रीगणेश के रूप में श्री माताजी की पूजा कर रहे हैं, हमारे भूमिदेवता के रूप में पूजा करते हुए, कृपया हमें उन सभी अनजाने गलतियों के लिए क्षमा करें जो हम सभी अज्ञानी बच्चों, श्री माताजी से हो सकते हैं।

।।...जय श्री माताजी...।।

विशाल काले (9422389261)
धनराज घाटुरले (7875674902)
सहजयोग ध्यान केंद्र, हिंगणघाट,
जिला वर्धा (महाराष्ट्र)

सहज योग कृषि को मिला श्रेष्ठ पुरस्कार

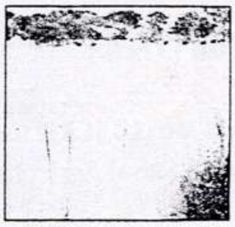

अजमेर, 8 फरवरी (मोन्यु)। राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान अजमेर की ओर से 4 दिवसीय किसान मेला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

इस मौके पर देश के राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा सहित 12 राज्यों के किसानों को प्रोजेक्ट प्रजेन्टेशन के द्वारा संगोष्ठियों के माध्यम से सहज कृषि की जानकारी दी गई। किसानों ने श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा संचालित सहज योग कृषि एवं सहज ध्यान योग की अनुभूति लाभ लिया साथ ही सहज योग से भूमि की उत्पादकता को बढ़ाने के तरीकों को जाना।

इस मौके पर जयपुर से आए राष्ट्रीय सहज योग कृषि समन्वयक जोड़ी परीख ने किसानों को सहज योग के माध्यम से कृषि की उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी दी। किसान मेले के समापन समारोह के दौरान मुख्यातिथि कुलपति के वाइस चांसलर डा. लोकेश शेखावत ने सहज कृषि तकनीक को श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए उत्तम श्रेणी का पुरस्कार दिया।

आयोजित प्रदर्शनी में अजमेर सहज योग ध्यान केन्द्र के समन्वयक देवेन्द्र शर्मा, डा. संदीप अवस्थी, वीरेन्द्रसिंह राठौड़, गोवर्धन शर्मा, रिपि, राव सहित अन्य सहज योगियों ने अपनी सेवाएं दी।

सहज कृषि पद्धति के चलते

ओलावृष्टि से बची फसल

कार्यालय संवाददाता

बारां, 10 मार्च। बीते माह मार्च में पश्चिमी विक्षोभ के कारण बदले मौसम से फसलों के चलते एक ओर जहां किसान आत्महत्या तक करने से नहीं चूके। वहीं अन्नदाता खेत में तैयार फसलों पर आ रही आफत

के चलते कई किसान प्रकृति के इस प्रकोप से बचाव के लिए धार्मिक स्थलों की शरण ले रहे तो कई इस संकट की घड़ी से बचाव के अन्य जतन करने में जुटे हुए हैं। ठीक इसी तरह शाहाबाद तहसील के [illegible] निवासी किसान राजेश मेहता ने दावा किया कि बीते दिनों क्षेत्र में हुई ओलावृष्टि से उनके आस पास खेतों में करीब 30 से 40 प्रतिशत गेहूं की फसल खराब हो गई।

लेकिन उनके द्वारा अपनाई सहज कृषि पद्धति के चलते उनके खेत में नुकसान का भी नुकसान नहीं हुआ। किसान राजेश मेहता ने कहा कि उनके [illegible] गांव स्थित में 60-70 बीघा भूमि पर गेहूं की फसल, पर अच्छी पैदावार के लक्षण है। वहीं उनके खलियान स्थित खेत पर ठीक वैसा हुआ, जबकि खेत महज कुछ दूरी पर स्थित एक अन्य किसान द्वारा खलियान में तैयार कर रखी धनिए की पैदावार ओलावृष्टि की चपेट में काली पड़ गई।

चेतन्य बीज की बुआई व माताजी के आशीर्वाद से आफत रही दूर

किसान राजेश ने बताया कि वह बीते 4 वर्षों से सहज ध्यान योग केन्द्र से जुड़े, जहां माताजी निर्मला देवी द्वारा प्रदत्त ध्यान क्रियाओं के साथ सहज कृषि प्रकृति अपनाई गई। जिसके चलते जयपुर व बारां केन्द्र से [illegible] के [illegible] चैतन्य बीज की बुआई [illegible] प्रभाव [illegible] कम नहीं थे। पूर्व में जहां प्राकृतिक आपदा से चलते समूचे [illegible] में [illegible] की पैदावार नाम मात्र थी। वहां उनके खेत में अच्छी धनिया पैदावार हुई। उसके बाद पुनः गेहूं की फसल को ले [illegible] भी जहां प्राकृतिक आपदाओं से मुक्त रही तथा पैदावार अन्य खेतों के मुकाबले काफी अच्छी है।

निशुल्क शिविर के जरिए देते हैं जानकारी

दूसरी ओर सहज ध्यान केन्द्र बारां के कोऑर्डिनेटर भरत बंसल ने बताया कि प्रत्येक रविवार को कोटा रोड सिविल लाइन स्थित केन्द्र पर शिविर का आयोजन किया जाता है। जहां जिलेभर से आने वाले साधकों को माताजी निर्मला देवी द्वारा विभिन्न ध्यान क्रियाएं व सहज कृषि पद्धति के बारे प्रेरित किया जाता है। बंसल ने कहा कि उक्त शिविर पूर्ण तथा निशुल्क होता है।

Moh 82900 8500[illegible]

देश की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ हो सकती हैं सहजयोग पद्धति से

सेमिनार में ट्रस्ट के सदस्य एवं कृषि वैज्ञानिकों ने की शिरकत

भास्कर न्यूज | सवाईमाधोपुर

[illegible]

[illegible]

साधारण बीजों की तुलना में पहले ही अंकुरित

[illegible] 15-20 प्रतिशत [illegible]

[illegible] वहीं देश में 450, राजस्थान में 60 से अधिक सम्मेलन केन्द्र चल रहे है। [illegible]

GSTIN : 06AAGN0273P1Z3

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

दूरभाष/ Phone 01662-276984
वेबसाईट/ Website http://nrfmtti.gov.in
ई-मेल/ Email : fmti-nr@nic.in

भारत सरकार
Govt. of India

उत्तरी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान

NORTHERN REGION FARM MACHINERY TRAINING & TESTING INSTITUTE

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (कृषि एवं किसान कल्याण विभाग)

MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE

ट्रैक्टर नगर, हिसार-125001 (हरियाणा) Tractor Nagar, Hisar-125001 (Haryana)

(AN ISO - 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTION)

प्रशस्ति पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि राष्ट्रीय सहज ग्रामीण कृषि मिशन, नई दिल्ली ने इस संस्थान में दिनांक 12 - 14, मार्च 2022 तक आयोजित "कृषि दर्शन एक्स्पो- 2022" में स्टॉल लगा कर इस मेले में पधारे हजारों किसानों को सहज़ योग ध्यान विधि द्वारा कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्म साक्षात्कार दिया तथा कृषि को लाभकारी बनाने के उपायों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर अति प्रशंसनीय कार्य किया है।

उ.क्षे.कृ.म.प्रशि.एवं.परी.सं. हिसार N.R.F.M.T.&T.I., HISAR

(डा॰ मुकेश जैन)

निदेशक

सत्यमेव जयते

NRCSS

INDIAN SOCIETY OF SEED SPICES

भाकृअनुप ICAR

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) तबीजी, अजमेर

एवं

भारतीय बीजीय मसाला समिति, अजमेर

पश्चिमी क्षेत्रीय कृषि विज्ञान मेला - 2014

(4-7 फरवरी, 2014)

प्रशस्ति-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि, ~~श्री/श्रीमती~~/मेसर्स नेशनल सहज एग्रिकल्चर प्रोजेक्ट, जयपुर

ने राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी, अजमेर (राजस्थान) पर आयोजित पश्चिमी क्षेत्रीय कृषि विज्ञान मेला-2014

में ~~प्रगतिशील कृषक~~ / ~~सरकारी संस्थानिक स्टाल~~ / गैर-सरकारी संस्थानिक स्टाल के रूप में भागीदारी की।

इस मेले में इन्होनें ~~प्रथम~~ / ~~द्वितीय~~ / तृतीय स्थान प्राप्त किया।

मेला समन्वयक

निदेशक एवं मेला अध्यक्ष

SAHAJA YOGA ROHTAK

19 to 25 JAN. 2015

Sahajyoga Rohtak Family is Extremely Grateful For... Agriculture Team (G.D. PAREEK) ... time ,Energy and Inspiring Contribution in Rohtak for Sahajyoga Public Program 25 january 2015.

Jai Shree Mata Ji

SAHAJA YOGA ROHTAK

Sahajyoga Rohtak Family is Extremely Grateful For.....Jaipur Team...
G.D. PAREEK
time ,Energy and Inspiring Contribution in Rohtak for Sahajyoga Public Program 25 january 2015.

Jai Shree Mata Ji

सहज कृषि द्वारा कृषि उत्पादन में वृद्धि खेत/ अनुसंधान कार्य पर

- कृषि विज्ञान केंद्र दहिगाओ अहमदनगर (महाराष्ट्र)- ग्वार GUAR की पैदावार 9.3 प्रतिशत बढ़ी

- सहज योग केंद्र जयपुर (जी. डी. पारीक संयुक्त निर्देशक कृषि राजस्थान सरकार) - गेहूं की पैदावार प्रतिशत बढ़ी (2 वर्ष आधार पर)

- महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय एवं टेक्नोलॉजी उदयपुर - मूँगफली की पैदावार प्रतिशत बढ़ी

- .फसल अनुसंधान केंद्र गज घाघरा घाट जिला बहराइच नरेंद्र देव विश्वविद्यालय फैजाबाद यु. पी.-
  - धान की पैदवार 29 प्रतिशत बढ़ी
  - गेहूं की पैदवार 28 प्रतिशत बढ़ी
  - पपीता 1.5 गुना बढ़ी चमकदार एवं बीमारी रहित
- .गोविंद वल्लभ पंत विश्वविद्यालय एवम प्रौद्योगिकी पंतनगर उत्तराखंड सहज कृषि पर हुए अनुसंधान कार्य-
  - लौकी 2.5 से 3 फुट लम्बी जबकि कंट्रोल में फुट लम्बी
  - टमाटर की भरपूर पैदावार
  - आकर्षक ,मनमोहक बड़े साइज के फूलों की पैदावार
- श्री तरुण चौधरी गौतम बुद्धनगर गिरिराजपुर ग्रेटर नॉएडा (राउरी) मो. 8010006864

  परिणाम - लौकी 1-1.5 किलो वजन, नींबू बड़े साइज के दाग रहित

- . श्री टंका गौतम चितवन नेपाल

  परिणाम - पपीता का अधिक उत्पादन बीमारी रहित

- श्री संदीप देशमुख सांगली महाराष्ट्र कृषि भूषण अवार्ड 2018 से सम्मानित मो. 9665946189
  परिणाम -सहज कृषि पद्धति से अनार का दुगना मुनाका एक अनार वजन 800 ग्राम से 1 किलो तक

- .श्री छोटू लाल ग्राम अर्जुन पुरा कोटा राजस्थान मो.9116604049
  परिणाम - सहज कृषि पद्धति से सब्जिओ की अच्छा उत्पादन , आलू 400 क्विन्टल पैदावार (गत वर्ष 175 क्विन्टल)

- श्री पंजाब राव बिहाड़े अकोला महाराष्ट्र मो.9552273001
  परिणाम- अरहर व चना अच्छी पैदावार (अरहर 10 क्विण्टल / एकड़ व चना 14 क्विण्टल / एकड़)

- .श्री नामदेव रहाणे ममदापुर अहमदनगर (महाराष्ट्र) मो.9422331758
  परिणाम - गन्ने की पैदावार से मुनाफा अच्छा

- . श्री महेश्वर लाल चौधरी लहान नेपाल
  परिणाम -धान की अधिक पैदावार

- . श्री महेश्वर लाल चौधरी लहान नेपाल

  परिणाम -धान की अधिक पैदावार

- श्री प्रियरंजन पलामू डाल्टनगंज झारखंड

  परिणाम - सहज पद्धति से मुर्गी पालन ,धन ,पपीता की खेती से फायदा उज्जैन मध्यप्रदेश

- .श्री राजेश माली उज्जैन मध्यप्रदेश

  परिणाम - गुलाब आकर्षक, महकदार बड़े साइज होने से मुनाफा ज्यादा

- .श्री नरेश साहु हावड़ा जिला बॉस राजस्थान मो.9079238021

  परिणाम -पत्तागोभी व लहसुन का अधिक उत्पादन

- .श्री विजय राज सिंह छिंदवाड़ा मध्यप्रदेश मो.9806231877

  परिणाम - गन्ने का दुगुना पैदावार 16-18 फुट लम्बा गन्ना

- .श्री मॉमी लाल आभारी कनोड उदयपुर राजस्थान

  परिणाम - सहज कृषि पद्धति से प्रसारित चैतन्य पानी के उपयोग से नील गाय (रोजड़े) द्वारा नुक्सान नही ,गेहू,चना भी अधिक पैदावार

- .श्री अनिल यादव बागराना राजस्थान

  परिणाम - नींबू के काम में उत्पादन अधिक दाग रहित नींबू

- .श्री सामलभाई पटेल पालनपुर मो.9429088269

  परिणाम - सब्जियों का अधिक उत्पादन ,किलो की फूलगोभी (आलू ,खीरा,काशीफल)
- .सहजयोगी रिटाइर कप्तान राजेश कुमार साहु मचलई जिला उदामु उत्तरप्रदेश

  परिणाम - गन्ने की अधिक पैदावार 70-80 टन प्रति एकड़ (लम्बाई तक़रीबन 20 फ़ीट कम से कम फ़ीट पैदा हुआ)

- .पुरखाराम कप्तान औसिया जोधपुर (राजस्थान) मो.9828311819

  परिणाम - कपास ,जीरा, गेहु ,बाजरा ,मुंग ,गौठ ,तिल की अच्छी पैदावार
- .श्री प्रकाश पटेल धार मध्यप्रदेश मो.9617262117

  परिणाम - चने का दुगुना उत्पादन मिला
- श्री सी.पटेल पल रबाड केरल मो.9447839465

  परिणाम - 600 एकड़ में सहज कृषि पद्धति अपनाकर मुनाफा ही मुनाफा
- .श्री सोमनाथ कुमले बेस्ट बंगाल

  परिणाम-आलू 10 क्विन्टल चैतन्य से कण्ट्रोल प्लॉट में 4.5 क्विन्टल
- .श्री हनुमान गायड कार परमनी महाराष्ट्र मो.9503826148

  परिणाम-सहज कृषि पद्धति उत्पादन अच्छा हुआ

10. किसान भाइयो सहज कृषि को अपनाकर अपनी कृषि लागत कम करके अधिक पैदावार लेकर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर खुशहाल ज़िन्दगी जीये |

मां का सपना साकार करने का विकल्प - सहज कृषि २०२५ का सकल्प

Toll Free No. 1800 2700 800

Website: www.sahajkrishi.in

सहजी भाई बहनों,

जय श्री माताजी

भारत में 65% आबादी कृषि एवं पशुपालन पर आश्रित है। सहज योग देहात का है ऐसा श्री माताजी ने बतलाया है। श्री माताजी निर्मला देवी के दर्शन (विजन) को पूरा करने के लिए सहज कृषि सबसे महत्वपूर्ण घटकों में (ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली 65% आबादी) शामिल हो गई है, परिणाम स्वरूप भारत के ग्रामीण समुदाय में सहज योग एवं सहज कृषि का प्रचार कर कृषकों को लाभान्वित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि श्री माताजी ने सहस्त्रार पूजा इटली 06.05.2001 को बतलाया की पूरे विश्व को विनाश से बचाना है तो कम से कम 40% लोगों को आत्म साक्षात्कार प्राप्त होना जरूरी है जो किसी राष्ट्रीयता शिक्षा जाति के स्तर की हो। अतः मां का सपना साकार करने में सहज कृषि का विशेष महत्व है।

श्री माताजी ने बतलाया कि वाइब्रेशन (चैतन्य लहरिया, स्पंद) एक जीवंत प्रक्रिया है जो सोचती है और कार्य करती है। जिस प्रकार लोहे का चुंबक पर प्रभाव होता है उसी प्रकार यह कार्य करती है।

सहज योग द्वारा प्रसारित चैतन्य लहरियों का प्रभाव मानव शरीर के उत्थान के साथ-साथ सभी जीवंत चीजों पर क्रमशः पृथ्वी, पानी, वनस्पति, वातावरण पर कार्य करता है, जिसे हम कृषि, बागवानी, पशु पालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, टिश्यू कल्चर, अन्न धान, सब्जी, फल, मसाले, औषधियां, फूलों की खेती इत्यादि में अधिक गुणवत्ता उत्पादन ले कर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होकर किसान खुशहाल हो सकता है।

सहज कृषि में सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1980 पुणे में, सूरजमुखी कमल के बड़े साइज 12" (30 सें. मी.) व्यास का दो किलो वजन फूल तथा औसतन तेल मात्रा 250 मिली लीटर प्राप्त हुई।

इसके बाद राहुरी कृषि विश्वविद्यालय में, उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय में, मूंगफली कमल पर, जयपुर में सहज कृषि प्रयोग वर्ष 2002 से 2004 तक, ऑस्ट्रिया (यूरोप में) वर्ष 1988 एवम अन्य शोध स्थानों एवं कृषकों की खेती पर आयोजन किया गया।

सहज कृषि कार्यक्रम की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली दिनांक 20.5. 2015 को किया जिस में 55 कृषि वैज्ञानिक उपस्थित थे। सकारात्मक उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए 10 अनुसंधान केंद्रों पर राजस्थान - 4 परीक्षण, महाराष्ट्र - 4 परीक्षण, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना विभिन्न फांसलों पर परीक्षण किए गए जिनके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

राजस्थान में राष्ट्रीय सहज कृषि कार्यक्रम की शुरुआत दिवाली पूजा अक्टूबर 2011 में हुई। सहज कृषि प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सकारात्मक एवं उत्साह जनक परिणामों को ध्यान में रखते हुए जनवरी 2012 में राष्ट्रीय सहज योग कृषि परियोजना का विस्तृत प्रस्ताव तैयार कर नेशनल ट्रस्ट, दिल्ली भेजा जिसमें 7 सदस्यों की टीम का गठन कर कार्य योजना बनाई गई। उपरोक्त प्रस्ताव नेशनल ट्रस्ट दिल्ली में अनुमोदन के बाद पूरे भारत में दो वर्ष तक सात सहज कृषि सेमिनार/वर्कशॉप का आयोजन कर 780 सहजी कृषि कॉर्डिनेटर प्रशिक्षित कर अपने अपने राज्यों में जिला, ब्लॉक, तहसील, ग्राम पंचायत एवम ग्राम स्तर (5 स्तर पर) प्रशिक्षणों का आयोजन कर कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।

इसके अलावा नेशनल ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रत्येक पूजा में सहज कृषि कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर व्यवहारिक तकनीक प्रदर्शन देकर लाभान्वित किया गया।

सहज कृषि प्रचार-प्रसार एवं सहज कृषि प्रदर्शनी के आयोजन में उत्कर्ष अवार्ड (Excellence Award) राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आई सी ए आर नई दिल्ली, हरियाणा कर्नाटका एवं अन्य राज्यों में प्राप्त हुए। फरवरी 2012 से फरवरी 2023 तक 512 सहज योग कार्यक्रम, वर्कशॉप, सेमिनार, जन जागरण शिविर, फील्ड डे (field day), पिकनिक आयोजन कर लाखों कृषकों को लाभान्वित किया गया।

विदेशों में सहज योग एवम सहज कृषि पर पहला प्रस्तुतीकरण (इन मेडिटेशन एंड प्रोडक्टिविटी इन एग्रीकल्चर) 5 मई 2015 को एक्सपो, मिलान इटली में किया गया जिस में 140 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अलावा कृष्ण पूजा एवम गणेश पूजा 18 से 28 अगस्त 2017 को कबेला इटली में सहज कृषि प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर 32 देशों के सहज योगियों को जानकारी दी गई।

सहज योग कृषि तकनीक को अपनाकर सकारात्मक रुझान देखने को मिल रहा है। अक्टूबर 2011 मैं लगातार भारत एवं विदेशों में सहज कृषि कार्यक्रम का सराहनीय कार्य हुआ। सहज योग की चेतन लहरियों में फसलों के अंकुरण, फूटान, उत्पाद एवं क्वालिटी में आशातीत वृद्धि देखी गई।

सहज कृषि तकनीक में सर्वप्रथम उन्नत किस्म के बीज व पानी को श्री माताजी के फोटो के समक्ष 24 घंटे रखकर चैतन्यमय किया जाता है। तो इसके बीज का भ्रूण जागृत हो जाता है तथा इन बीजों के बोने से साधारण बीज से 2 से 3 दिन जल्दी अंकुरण के बाद बीज का विकास तेजी से होता है। (पिक अप ग्रोथ) पौधों की बढ़वार अच्छी होने से फसल में आशातीत वृद्धि देखी गई।

सिंचाई में चैतन्यामय पानी के उपयोग से वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर, कृषि उत्पादन एवं क्वालिटी में सकारात्मक वृद्धि देखी गई (करीब 10 से 15% तक उत्पादन में वृद्धि)।

सहजी किसान भाइयों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल एवं व्यवहारिक रूप में वेबसाइट www.sahajakrishi.in हिंदी व अंग्रेजी में तैयार की गई जिसमें सहज कृषि तकनीक, सहज कृषि अनुसंधान/ परीक्षण भारत एवं विदेशों में सफल कहानियां, तकनीकी साहित्य प्रदर्शनी सामिग्री एवं सोशल मीडिया द्वारा प्रचार-प्रसार इत्यादि।

अधिक जानकारी के लिए उपरोक्त वेबसाइट को अवश्य देखें।

जी डी पारेख
नेशनल सहज कृषि कोऑर्डिनेटर
मोबाइल 982 845 1514
ईमेल gdpareek@yahoo.com

डॉ वीरेंद्र सिंह
पूर्व प्रोफेसर सी.एम. वे
कृषि विश्वविद्यालय
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल 9418045229

चलो गाँव की ओर - शुभारम्भ

परम पूज्य श्री माताजी की असीम कृपा से दिनांक 23.02.2025 परमचैतन्य दिवस से 21.03.2025 श्री माताजी के जन्म दिवस के दौरान "चलो गांव की ओर अभियान का शुभारम्भ 23.02.2025 को किया जा रहा है। जिसमें सम्पूर्ण भारत वर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मसाक्षात्कार जन जागृति एवं सहज कृषि प्रचार-प्रसार हेतु कार्य किया जाना है। सभी सहजी भाई-बहनों से निवेदन है कि हम सब मिलकर राजस्थान के गावों में इस पावन कार्य में अपनी सहभागिता अपनी-अपनी यथा शक्ति से टीम बनाकर सक्रिय भागीदारी देकर परम चैतन्य के यन्त्र बनने का सोभाग्य प्राप्त कर माँ के कार्य को जन-जन तक फैलाने का कार्य करे। गांवों के अन्दर आत्मसाक्षत्कार एवं सहज कृषि कार्य हेतु दिशा-निर्देश संलग्न किए जा रहे है। राजस्थान सहज टीम निम्नानुसार है :-

1. श्री राहुल मीणा (अलवर) 9649553314
2. श्री राम बाबु मीणा (करौली) 8826374886
3. श्री श्याम लाल महावर (स. माधोपुर) 8741811907
4. सुश्री भावना खण्डेलवाल (दौसा) 9521925034
5.श्री डागरा राम मालविया (पाली) 9216442650
6. श्री सुल्तान सिंह (सिरोही) 8769838519
7. डॉ. शिव (चित्तौडगढ) 9711103827
8. श्री बहादुर मल सैनी (झुझुनू) 9646444926
9. श्री विनोद उपाध्याय (जयपुर) 9509280673
10. श्री सुमेर सिंह अजमेर 9928722607
11. श्री मदन सिंह बांसवाडा 9602482299
12. श्री राजेश महता बांरा 9610136060
13. श्री चद्रप्रकाश अरोडा भीलवाडा 7014405952
14. श्री भूपसिंह भरतपुर 9694340634
15. श्री अशोक सोलंकी बीकानेर 7737072981
16. श्री विश्वनाथ बूदी 9413129159
17. श्री विद्यासागर तुलफिया चित्तोड 7597961185
18. श्रीमती उर्मिला बिदुडी दौसा 6377516098
19 . श्रीमती मीमानसा धोलपुर 9407493688
20. श्री विजय कोशिक हनुमानगढ 9983827611
21. श्री अरविंद पाटीदार झालावाड 9461035015
22. श्री रामेश्वर जोधपुर 9414560444
23. श्री सुरेश गोयल हिडोन सिटी 9414401247
24. श्री राहुल राम कौशिक कोटा 7413070670
25. श्री मनाराम नागौर 8769358106
26. श्री देवेश सिंह राठौड पाली 9214422626
27. श्री बी.आर. मील श्रीगंगानगर 9413349552
28. श्री मोहन सिंह सीकर 7425977273
29. श्री बसंत पुरोहित उदयपुर 9829114737

राज्य कृषि एवं ग्रामीण सलाहकार टीम श्री जी.डी पारीक 9828451514/श्री नवनीत त्रिपाठी 8963877777

आई.पी. अग्रवाल, राज्य कृषि समन्वयक 9829615151

गांवों में सहज योग एवं सहज कृषि जन जागरण कार्यक्रम हेतु दिशा निर्देश

1. आवश्यक सामग्री - पोर्टबल माईक, स्टेडी, श्रीमाताजी फोटो, सहज योग एवं सहज कृषि साहित्य/ फलेक्स, डायरी, पैनड्राईव, प्रसाद के लिए गुड, चना
2. टीम - 3-4 सहज योगी एव सहजयोगिनी जरूरी
3. कार्यक्रम एक से डेढ घंटा
4. वाहन की व्यवस्था जिला सेन्टर या सहजी द्वारा व्यवस्था, आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पूर्व में सुनिश्चित करे।
5. तत्पश्चात कार्यकम आयोजन स्थल पर बैठने की व्यवस्था स्टेंडी/फोटो लगाना, बीज व पानी के सैम्पल, तकनीकी साहित्य इत्यादि को व्यवस्थित करे। अच्छा वातावरण बनाने हेतु गणेश भजन लगाये।

शेष पेज 23 से..

निरन्तर पेज 22 का शेष...

6. गाव मे प्रवेश करने पर गाव के प्रभावशाली व्यक्ति जैसे सरपंच टीचर से सम्पर्क कर गांव मे आने का उद्देश्य बताएँ तथा सहज योग कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु उपयुक्त स्थान का चयन करे व व्यवस्था सुनिश्चित करे, स्थान का चयन करते समय ध्यान रखे कि **स्थानीय सरकारी भवन, पंचायत, स्कुल, चोपाल का चयन करें किसी अमुक व्यक्ति के निवास का उपयोग ना करे।**

7. इसके बाद उपरोक्त सहजी टीम गांव का भ्रमण करें माईक द्वारा ग्राम वासियों को आने का उद्देश्य बताते हुए सहज योग एवं सहज कृषि के पेम्पलेटस वितरण करें तथा संदेश दे (खुशखबरी.... आपके गांव में सहजयोग ध्यान का कार्यकम समय बजे, स्थान पर आयोजित किया जा रहा है, **ग्रामवासीयो से निवेदन है कि समय पर पधार कर कुण्डालिनी जागरण कर अपना अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करे तथा चैतन्य लहरियों का कृषि एवं पशुपालन में उपयोग कर अच्छा उत्पादन प्राप्त करें। यह कार्यक्रम पूर्णतया निःशुल्क है। गांव में भ्रमण करते समय चैतन्यमय जल से भरी बोतल में छेद करके छिडके जावे ताकि चैतन्य लहरियों बहाव फैल सके।**

8. आत्मसाक्षत्कार देते समय सर्वप्रथम माँ के बारे में संक्षिप्त जानकारी, नाडी चको की जानकारी, सन्तुलन प्रकिया 15-20 मिनट में समझाए (पृथ्वी पर दोनो हाथ रखकर ईडा पिगला, सफाई, गणेश तत्व, फिर दोनों हाथ हृदय लेवल रखते हुए आत्मसाक्षत्कार, योग, करूणा, प्रेम एवं कुण्डलनी शक्ति जाग्रति हेतु प्रार्थना, आवश्यकतानुसार ध्यान प्रकिया अपनाए।

9. सहज योग के बाद सहज कृषि तकनीक के लिए सर्वप्रथम बीज, पानी के सैम्पल ग्रामवासीयों को बतलाते हुए श्री माताजी चरणों में रखें, दुसरें कंट्रोल (बिना चैतन्य) के दूर प्लास्टिक थेली में लपेटकर अलग रखें। साधारण तरीके से ग्रामवासीयों को सहज कृषि तकनीक समझाये बाद में माँ के समक्ष रखें बीज व पानी के सैम्पल में चैतन्य प्रवाह के अनुभव के बारे मे ग्राम वासियों से पूछे साथ में कंट्रोल बीज पानी के बारे में किसानों के अनुभव जानकर **दोनों सैम्पल में अन्तर को समझाए कि किस प्रकार इस चैतन्य जल, बीज का उपयोग कृषि, बागवानी, पशु पालन इत्यादि में किया जाना है कि जानकारी 15-20 मिनट में दी जाए। कृषको को सफल कहानी फोटो दिखाई जाए। कृषकों को सहज कृषि तकनीक बतलाए सर्वप्रथम श्री माताजी के फोटो के समक्ष बीज, (अनाज, दलहन, तिलहन, फल, फुल, सब्जी, पौध, कटिंग अन्य जीवन सामग्री) एवं एक बाल्टी पानी प्रातः / साय 24 घंटे रखकर चैतन्यित करे, प्रार्थना करे कि श्री माताजी आपके समक्ष बीज व पानी को चैतन्यमय कर दीजिए, अपने प्यार की शवित भर दीजिए, दूसरे दिन चैतन्यमय जल को खेत के चारों ओर छिडके, पानी की होद, कुएं इत्यादि में डाले। पलेवा के समय पानी चैतन्यमय मटके में भरकर धोरो पर रखें मटके में छोटा छेद करके जल प्रवाहित करें बुवाइ से पूर्व खेत की नकारात्मकता खत्म करने के लिए चोकोर खेत में चारों ओर तथा टेडे मेडे खेत में बीचो बीच एक से डेळ फुट का खड्डा खोदकर पानी के नारियल में स्वास्तिक बनाकर सर्वपथम भूमि पूजन (जल, फूल, रोली) डालकर भूमिमंत्र, गणेशमंत्र ले, गणेश अथर्वशीर्ष बोलते हुए नारियल स्थापित करे। पानी व फसल को दोनों हाथ आगे करते हुए चैतन्यमय प्रवाहित करे, शाकम्भरी देवी मंत्र ले। श्री माताजी आप साक्षात हरियाली एवं वन की देवी है कृपया बीज, पानी, फसल को चैतन्य से आशीर्वादित कर दीजिए यह खेत, फसल आपकी है। आप ही कर्ता है, आप ही भोक्ता है, कृपया मेरी खेती अच्छी कर दीजिए, पशुपालन व बागवानी में चैतन्य जल का उपयोग करके अच्छा लाभ ले सकते है।**

10. घर पर ध्यान कैसे किया जाए समझाएं साहित्य वितरण करे।

11. फोलोअप कार्यक्रम की जानकारी दी जाए, मिटिंग में आए कृषको की सूची मे मोबाईल नम्बर नोट किए जाए।

12. ग्रामीण सहज सेंटर बनाने का अनुरोध व अन्य सुझाव लिए जाए। गुड चने के साथ वितरण किया जाए।

सहज कृषि के अद्भुत लाभ

सावली विहीर, शिर्डी साईबाबा के नजदीक, यहाँ के सहज कृषि प्रगती शील किसान, श्री संजयजी वर्षे साहब, इनके खेतो में आमरुद, आम,थाई जामून, आला,और हल्दी के प्लांट को खेतीपर व्हायब्रेशनस देते हुए श्रीमान कैलास जाधव, श्रीमान राऊत जी, और खुद खेती मालीक

कभी सोचा है कि हमारी धरती माता को भी चैतन्य मिल सकता है?

आइए, एक अनोखे आत्मसाक्षात्कार कार्यक्रम में भाग लें! तेईस फरवरी से इक्कीस मार्च तक - यानि परम चैतन्य दिवस से जन्मदिवस तक, पूरे भारत में एक साथ! सहज योग कृषि प्रचार प्रसार टीम द्वारा आयोजित - 'आत्मसाक्षात्कार कार्यक्रम - चलो गाँव की ओर! स्वयं प. पू माताजी श्री निर्मला देवी का भी कुछ ऐसा ही कहना था की - 'सहज योग को गांवों में शहरों की अपेक्षा अधिक प्रचारित और प्रसारित करना जरूरी है। शहरों में यह अपने आप फैल जाएगा, लेकिन सहजयोगियों को गांवों में सहज योग का प्रसार करना चाहिए ताकि किसानों की समस्याएं और दुखों का समाधान हो सके। हम ग्रामीण क्षेत्रों में सहज योग का प्रचार करके एक क्रांति भी ला सकते हैं।'

इसीलिए हम सहज योगियों का विज़न मिशन statement यही है की - ग्रामीण क्षेत्रों में सहज योग और सहज कृषि का विस्तार! शांति और समृद्धि, दूसरी हरित क्रांति की ओर कदम!

अब आप जानना चाहेंगे की आखिर सहज योग से होता क्या है?

जैसे बीज अपने आप अंकुरित होते हैं, वैसे ही श्री माताजी की कृपा से हमारी सुषुप्त दिव्य कुण्डलिनी शक्ति भी सहज रूप से जागृत होती है!"

"जैसे ही साधक अपने सर के तालु भाग, हाथों और हथेलियों से चैतन्य तरंगों को महसूस करता है, उसे पता चलता है कि उसके भीतर दिव्य ऊर्जा जाग उठी है!"

"यही दिव्य ऊर्जा पंचमहाभूतों में फैलती है, प्रकृति और पर्यावरण को शुद्ध करती है!" "इसीलिए किसान जब सहज योग का अभ्यास करते हैं, तो उनकी कृषि में चमत्कारी लाभ होते हैं!"

चलिए अब सीखते है की कैसे किया जाये सहज कृषि -

सहज कृषि तकनीक - 4 आसान कदम

पहला कदम: सहज योग ध्यान सीखें। सहजयोगी किसान नियमित रूप से और निःशुल्क सहज योग ध्यान सिखाते हैं।

दूसरा कदम: बीज, जल और नारियल को चैतन्यित करें। श्री माताजी के सम्मुख इन्हें पूरी रात रखें ताकि वे दिव्य ऊर्जा से भर जाएँ।

तीसरा कदम: भूमि पूजन और हवन करें। चैतन्यित बीजों को बोएं और सिंचाई के लिए चैतन्यित जल का उपयोग करें।

चौथा कदम: दैवीय स्पंदनों (चैतन्य) से फसलों का पोषण करें। नियमित ध्यान और चैतन्य के माध्यम से फसलों की वृद्धि को समर्थन दें।

उज्जैन मे राष्ट्रीय सहज कृषि की प्रशंसा

निर्मला धाम , आरडगाव , अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) यह विश्वका प्रथम सहज आश्रम है। सहजकृषि की शुरुआत प. पू. माताजी श्री निर्मलादेवीजी ने इसी पवित्र भूमी से की है जो मानव के लिये एक वरदान है।

महाराष्ट्र एक विशेष देश है. उसमें राहुरी उसका हृदय है. वहाँ का विश्वविद्यालय, जहाँ किसान आकर सीखते हैं, यह सब महाराष्ट्र में जाकर आज यहाँ से यह 'लेना' (पवित्रता) लेकर जाने वाले हैं. जो पवित्रता का 'लेना' है, उसे हर गाँव और हर शहर तक ले जाने की आज आपकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है...

श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा प्रेणित सहज योग का प्रभाव न केवल मानव के उत्थान के लिए वरन् जीवात्मा या जीवन में भी इनके प्रभाव वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा देखने को मिले हैं। मानव के अंदर रीढ़ की हड्डी के नीचे त्रिकोणाकार अस्थि में कुण्डलिनी की शक्ति साढ़े तीन कुण्डलों में सोई अवस्था में विराजमान है। श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा आत्म साक्षात्कार प्राप्त करके इस शक्ति को जागृत किया जा सकता है। श्री माताजी ने बतलाया कि "वाइब्रेशन्स (चैतन्य लहरियां / स्पंद) एक जीवन्त प्रक्रिया है। जो सोचती है और कार्य करती है।" इन चैतन्य लहरियों का प्रभाव सभी जीवन्त चीजों पर क्रमशः पृथ्वी-पानी, वनस्पति, वातावरण के साथ-साथ मानव के उत्थान पर भी पड़ता है।

इसी संदर्भ में कृषि के क्षेत्र में सहजयोग की चैतन्य लहरियों का प्रभाव गेहूँ की फसल में पहली बार प्रयोग करके देखा गया जिसके उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले हैं। यद्यपि पूर्व में कृषि के क्षेत्र में विश्व के कई अनुसंधान केन्द्रों पर प्रयोग किये जा चुके हैं। जिसके उत्साहजनक परिणाम की जानकारी आपको दी जा रही है।

पशु विज्ञान परीक्षण-

(1) जहाँ तक हो सके छोटे पशु/पक्षी जैसे खरगोश, ईमू बछड़े, पक्षी, मुर्गी इत्यादि का चयन इन परीक्षणों में करें।

(2) चैतन्य व कन्ट्रोल के लिए 14-14 पशु पक्षियों का चयन किया जावे जिससे जाति, उम्र एवं वजन जहाँ तक हो सके दोनों परिस्थितियों में समान हो।

(3) पशु विज्ञान परीक्षण मुख्यतया चैतन्यमय पानी व चारा इत्यादि को आधार मानते हुए किये जावेंगे। पहले 8 दिन किसी भी प्रकार की रीडिंग नहीं लेते हुए बाद की सभी सूचनायें प्रपत्र - 3 में भरे, इस परीक्षण में यह ध्यान रखना है कि 56 दिन बाद चैतन्यमय पशु पक्षी को कन्ट्रोल के स्थान (बाडा) में रखा जावे तथा कन्ट्रोल पशु / पक्षी को चैतन्यमय स्थान पर रखना है, यह ट्रायल भी आगे 56 दिन तक जारी रखनी है।

सहज कृषि पर हुए अनुसंधान के दौरान पशुओं के बारे में भी सहज अनुसंधान डॉ. हमीद माईलिनी, वियाना (आस्ट्रिया) यूरोप द्वारा किया गया तो परिणाम यह रहा कि पशुओं के वजन में 15 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हो गई, उनके स्वास्थ्य के लिए कोई कृत्रिम उपाय करने की जरुरत नहीं पढ़ी।

गांवों में सहज कृषि से क्रान्ति

अंकुरण पर वाइब्रेशन का प्रभाव

अंकुरण पर वाइब्रेशन का प्रभाव

साल 1988, पुणे में एक लेक्चर के दौरान, श्री माताजी ने एक बहुत ही सुंदर और महत्वपूर्ण संदेश दिया था।

श्री माताजी का उद्धरण: "सहज योग को शहरों की बजाय गांवों में अधिक फैलाना होगा। शहरों में अपने आप फैल जाएगा, सहज योग को गांवों में फैलाना चाहिए ताकि किसानों की समस्याओं और दुखों का समाधान हो सके। हम भी ग्रामीण क्षेत्रों में सहज योग फैलाकर क्रांति ला सकते हैं।"

"और आज, हम बड़े ही हर्ष और गर्व के साथ आपको बताना चाहते हैं कि — सहज योगियों ने मिलकर एक अभियान शुरू किया है जिसका नाम है: 'चलो गाँव की ओर'।"

"हम किसानों और ग्रामीण भाई-बहनों को सहज योग ध्यान सिखा रहे हैं। साथ ही सिखा रहे हैं— सहज कृषि की वो अद्भुत तकनीक, जिससे फसलें भी चैतन्य में खिल उठती हैं।

महाराष्ट्र एक विशेष देश है. उसमें राहुरी उसका हृदय है. वहाँ का विश्वविद्यालय, जहाँ किसान आकर सीखते हैं, यह सब महाराष्ट्र में जाकर आज यहाँ से यह 'लेना' (पवित्रता) लेकर जाने वाले हैं. जो पवित्रता का 'लेना' है, उसे हर गाँव और हर शहर तक ले जाने की आज आपकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है... 24/02/1979 राहुरी, सेमिनार (तीसरा दिन)

"इस धरती माँ को देखिए, अगर आप इसमें बीज डालते हैं तो यह आपको फूल देती है. इसके लिए यह आपसे कितने पैसे लेती है? आप एक जीवंत कार्य के लिए कितने पैसे दे सकते हैं? यह एक प्रेम का कार्य है। हम प्रेम को नहीं समझते, उस प्रेम को जो सारे संसार का पोषण करता है, जो हर एक चीज़ की देखभाल करता है।

आप देखिए, हर एक पेड़ की अपनी सीमाएं हैं। हमारी भी अपनी सीमाएं हैं। जब हम इन सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं, तो हम घातक बन जाते हैं, कष्टप्रद बन जाते हैं। हमारे जीवन की सारी समझ इस चैतन्यित प्रेम से मार्गदर्शित है। यह एक निर्लिप्त प्रेम है। मानव रुप में हम इस क्रमिक विकास का प्रतीक हैं, और हम उस अंतिम लक्ष्य को खोज रहे हैं, और एक बार जब आप इसे पा लेंगे, तो आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे।" - 22 नवंबर 1990

खेतों में ईश्वरीय कंपन

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने 26 नवम्बर 2010 को सहज पब्लिक स्कूल, जयपुर का उद्घाटन किया। इस पावन अवसर पर सहज योग एवं सहज कृषि अनुसंधान परियोजना का प्रस्ताव श्रद्धापूर्वक उनके पवित्र चरणों में प्रस्तुत किया गया। श्री माताजी की दिव्य अनुमति प्राप्त होने के पश्चात, पहला आधिकारिक सहज कृषि कार्यक्रम राष्ट्रीय दीपावली पूजा के दौरान अक्टूबर 2011 में आयोजित किया गया।

इससे पूर्व, वर्ष 2002–2003 के दौरान जयपुर में गेहूं की फसल पर सहज कृषि तकनीकों पर आधारित एक सफल प्रयोगात्मक अध्ययन किया जा चुका था।

जनवरी 2012 में, राष्ट्रीय सहज कृषि परियोजना का एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार कर नेशनल ट्रस्ट, नई दिल्ली को प्रेषित किया गया। स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात, दो वर्षों तक निरंतर पाँच स्तरों जिला, ब्लॉक, तहसील और ग्राम स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ एवं संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं।

प्रशिक्षण हेतु समृद्ध सामग्री तैयार की गई, जिसमें साहित्य, पैम्फलेट, सहज कृषि पर सात पुस्तिकाएँ और फ्लेक्स प्रदर्शनी किट शामिल थीं। ये सभी सामग्री भारत के विभिन्न राज्यों के कृषि समन्वयकों को वितरित की गई।

चलो गाँव की ओर अभियान – राजस्थान

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी के अनुग्रह और आशीर्वाद से "चलो गाँव की ओर अभियान" का कार्य 21 मार्च 2025 से पूरे भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सहज योग और सहज कृषि का संदेश प्रसारित कर रहा है। यह पहल श्री माताजी के 1988 के पुणे प्रवचन की उस दिव्य दृष्टि से प्रेरित है — कि सहज योग को गाँवों तक पहुँचाना चाहिए, केवल शहरों तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

राजस्थान में यह अभियान सितंबर 2024 से निरंतर चल रहा है। अक्टूबर 2025 के मध्य तक इस टीम ने 128 गाँवों में 65 कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए, जिनमें लगभग 23,810 लाभार्थियों — ग्रामीणों, किसानों और विद्यालयों के विद्यार्थियों — को आत्मसाक्षात्कार (Self-Realisation) का अनुभव कराया गया।

यह पवित्र कार्य राजस्थान ग्रामीण कृषि समन्वय टीम के नेतृत्व में हो रहा है। वर्तमान में राज्य में लगभग 51 ग्रामीण सहज योग केंद्र सक्रिय हैं, जो 21 मार्च 2026 तक 103 केंद्रों के लक्ष्य की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहे हैं। प्रत्येक केंद्र को सहज योग एवं सहज कृषि की सामग्रियों से सुसज्जित किया गया है — जिनमें 75 फ्लेक्स किट्स (सूक्ष्म प्रणाली चार्ट एवं सहज कृषि तकनीक गाइड) तथा 4,10,000 से अधिक पुस्तिकाएँ और फोल्डर ग्रामीण जनों में वितरित किए जा चुके हैं।

स्पंदन और उनका सकारात्मक प्रभाव

सहज योग ध्यान के माध्यम से ईश्वरीय शक्ति से उत्पन्न स्पंदन (चैतन्य लहरियाँ) को हाथों की हथेलियों और सिर के शीर्ष पर शीतल हवा के रूप में अनुभव किया जा सकता है। ये सूक्ष्म कंपन न केवल मनुष्य पर बल्कि प्रकृति पर भी शुद्धिकरण और पोषण का प्रभाव डालते हैं — जिससे कृषि, बागवानी, कुटीर उद्योग और पशुपालन में अत्यंत लाभदायक परिणाम देखने को मिलते हैं।

सहज कृषि के लाभ - जब किसान सहज योग का अभ्यास करते हैं और अपने खेतों में ईश्वरीय कंपन प्रवाहित करते हैं, तो उनके परिणाम अद्भुत होते हैं - अन्न और फसलों के उत्पादन में वृद्धि, पौधों की वृद्धि, शक्ति और विकास में सुधार, कीट, रोग एवं प्राकृतिक आपदाओं से प्राकृतिक सुरक्षा, पशु आहार एवं उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार, पशुओं के स्वास्थ्य और प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, दूध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि इस प्रकार सहज कृषि आध्यात्मिकता और विज्ञान का सुंदर संगम है, जो संतुलन, जीवनशक्ति और स्थायित्व प्रदान करती है।

कुण्डलिनी जागरण मात्र से ही मानव संपूर्ण विश्व शांति युग में प्रवेश कर पाएगा

संवाद अपडेट

विशेष संवाददाता . शिव कांत पाल कानपुर देहात सहज योग आत्म-साक्षात्कार कार्यक्रम और ÷कुण्डलिनी जागरण ङ्क चलो गाँव की ओर÷ अभियान आज के समय की एक अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक और सामाजिक पहल बन चुका है। परम पूज्य आदिशक्ति श्री माताजी श्री निर्मला देवी मां की इच्छानुसार आत्म-साक्षात्कार को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना सहजयोगियों का पवित्र दायित्व है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए वाइस चेयरमैन, नेशनल ट्रस्ट श्री सोहन लाल भल्ला जी ने सभी सहज योगियों से करुणा, समर्पण और जिम्मेदारी के साथ एक विशेष आव्हान किया है– ÷चलो गाँव की ओरज माँ का सपना साकार करें।÷गाँव भारत की आत्मा हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में आध्यात्मिकता, सहजता और प्रकृति के प्रति आदर गहराई से जीवित है। ऐसे वातावरण में सहज योग का प्रसार अत्यंत तेजी और सरलता से फलता-फूलता है। गाँवों में लोगों का मन अपेक्षाकृत अधिक पवित्र, शांत और ग्रहणशील होता है। यहाँ आत्म-साक्षात्कार तुरंत अनुभव होता है और कुण्डलिनी जागरण सहजता से कार्य करता है। ग्रामीण समाज के वास्तविक उत्थान का प्रारंभ भी यहीं से होता है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण के बाद व्यक्ति के अंदर शांति, संयम, संतुलन और करुणा का विकास होता है, जिससे परिवार, समाज और गाँव में सकारात्मक परिवर्तन दिखने लगते हैं।सहज ध्यान गाँवों में तनाव, क्रोध, अवसाद और नशामुक्ति जैसी समस्याओं को दूर करने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। साथ ही सहज कृषि, किचन गार्डन और चैतन्यमय खेती की तकनीकें ग्रामीण जीवन और पर्यावरण को नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किसान जब चैतन्ययुक्त कृषि अपनाते हैं तो मिट्टी, पौधों और भूमि की उर्वरता में अद्भुत सुधार दिखाई देता है। इस प्रकार गाँवों में सामाजिक एकता, प्रेम और भाईचारे की भावना जागृत होती है तथा संपूर्ण समाज में शांति का वातावरण निर्मित होता है।ा सोहन लाल भल्ला जी का आव्हान केवल शब्द नहीं, बल्कि माँ के कार्य के प्रति एक अंतरंग आध्यात्मिक पुकार है। उनका संदेश सहज योगियों को प्रेरित करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आत्म-साक्षात्कार के कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित हों, सहज योग का अमृत प्रत्येक घर तक पहुँचे और गाँव-गाँव में चैतन्य का प्रसार हो। उनका भाव यही है कि सहजयोगी विनम्रता, प्रेम और समर्पण के साथ गाँव की ओर चलें और भारत का प्रत्येक ग्राम सहजयोगमय बने।गाँव जाना केवल एक सामाजिक कार्य नहीं, बल्कि माँ की गोद में लौटने जैसा अनुभव है। वहाँ की मिट्टी में करुणा की सुगंध है, हर घर की मुस्कान में निर्मल प्रेम की झलक है और हर हृदय आत्म-साक्षात्कार की पवित्र अनुभूति पाने को तैयार बैठा है। जब सहजयोगी गाँव में ध्यान कराते हैं, कुण्डलिनी जागरण होता है और लोगों के चेहरों पर अचानक खिलती शांति दिखाई देती है, तो ऐसा लगता है मानो स्वयं श्री माताजी चलकर उनके बीच बैठ गई हों। यही अनुभूति इस अभियान को आध्यात्मिकता का एक जीवंत यज्ञ बना देती है।परम पूज्य आदिशक्ति श्री माताजी श्री निर्मला देवी मां का सपना था कि आत्म-साक्षात्कार प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचे। यह सपना अब सहजयोगियों की सामूहिक जिम्मेदारी है। श्री सोहन लाल भल्ला जी के प्रेरणादायी आव्हान से यह पवित्र कार्य और भी प्रभावशाली बन रहा है। अब समय है कि हम सब मिलकर माँ के चरणों में यह संकल्प रखें– *÷चलो गाँव की ओरज चलो माँ के सपने को साकार करने की ओर।÷*

अद्भुत चैतन्य, अद्भुत खेती

1. मानव का रूपांतरण और चेतना, बपतिस्मा, धर्म: चैतन्यित जल पीने से मनुष्य के भीतर चेतना का जागरण होता है, धर्म की स्थापना होती है और यह बपतिस्मा का वास्तविक अनुभव देता है।

2. औषधि – रोगों का इलाज / एंटीबायोटिक्स: यह जल प्राकृतिक एंटीबायोटिक की तरह कार्य करता है और विभिन्न बीमारियों को ठीक करने में सहायक होता है।

3. आभूषण : आभूषणों को चैतन्यित जल में धोने से उनकी नकारात्मक ऊर्जा निकल जाती है और वे शुभ कंपन देने लगते हैं।

4. घर : घर में चैतन्यित जल का छिड़काव करने से वातावरण शुद्ध और शांतिमय हो जाता है।

5. कृत्रिम गुरु, राक्षस या भूत – मटका उपचार: मटका (पॉट) में चैतन्यित जल भरकर रखने से नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है।

6. कृषि – गैर-हाइब्रिड बीज: चैतन्यित जल से बीज सींचने पर प्राकृतिक फसल अच्छी होती है और पौधे मजबूत बनते हैं।

7. पशु विज्ञान – दूध उत्पादन: पशुओं को यह जल पिलाने से वे स्वस्थ रहते हैं और दूध की गुणवत्ता बेहतर होती है।

8. फूल – वृद्धि और ताजगी: चैतन्यित जल से फूल अधिक समय तक ताजे और सुंदर रहते हैं।

9. कुआँ – पीने का पानी: कुओं में यह जल डालने से पानी शुद्ध हो जाता है और पीने योग्य बनता है।

10. जंगल के पेड़ – अम्ल वर्षा: पेड़ों पर चैतन्यित जल का छिड़काव करने से अम्ल वर्षा का दुष्प्रभाव कम होता है।

11. गरीबी, भौतिकवाद, पारिस्थितिक असंतुलन, अतिआधुनिकता, कट्टरवाद : चैतन्यित जल सामूहिक चेतना को संतुलित करता है जिससे इन सामाजिक समस्याओं में कमी आती है।

12. विशुद्धि चक्र उपचार, संवाद: गले पर चैतन्यित जल का प्रयोग करने से विशुद्धि चक्र संतुलित होता है और संचार क्षमता में सुधार आता है।

13. लीवर का उपचार: लीवर पर यह जल रखने या पीने से लीवर संबंधी रोगों में आराम मिलता है।

14. शारीरिक स्वास्थ्य – रोग – कैंसर, कुष्ठ रोग, एलर्जी, मायलाइटिस: यह जल इन गंभीर बीमारियों में शारीरिक कंपन को संतुलित करने में मदद करता है।

15. सेंसिबल सहजयोगी: यह जल सहजयोगियों को अधिक संवेदनशील और संतुलित बनाता है।

16. मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक विकास : यह जल तीनों स्तरों पर पूर्ण विकास में सहायक है।

17. होली उत्सव: होली जैसे पर्वों में इसका प्रयोग वातावरण को पवित्र और सुरक्षित रखता है।

18. बागवानी : चैतन्यित जल से पौधे तेजी से बढ़ते हैं और स्वस्थ रहते हैं।

प्रश्न: आपको सहज कृषि का अनुभव कैसा रहा? आपने इसकी शुरुआत कैसे की?

उत्तर (सीताराम): हमने टीवी और मोबाइल पर सहज कृषि के बारे में देखा था। उसी के आधार पर मैंने इसे अपनाने की सोची। मैं कोटा का रहने वाला हूं और खेती-किसानी का काम करता हूं। सबसे पहले मैंने सहज तरीके से नारियल का प्रयोग किया — पाँच नारियल खेत में चारों कोनों पर और एक बीच में रख दिया। इसके बाद मैंने उस खेत में सरसों (राई) बोई। जब पहली बार बारिश हुई, तो मैंने देखा कि सरसों की फसल बहुत ही जोरदार और स्वस्थ हुई। इतनी अच्छी पैदावार हुई कि मेरा नाम इलाके में प्रसिद्ध हो गया। पड़ोस के किसानों की फसल की तुलना में मेरी फसल में काफी अधिक उत्पादन हुआ। गाँव के लोग भी यह देखकर हैरान रह गए कि सहज तरीके से की गई खेती में फसल कितनी बेहतर आई।